गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 216
दि. 07.12.2025,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

इंडिगो पर कड़ा प्रहार: सरकार का अल्टीमेटम, रात आठ बजे तक हर यात्री का पैसा लौटा दो वरना सख्त कार्रवाई

(जीएनएस)। दिल्ली की सर्द हवा में जैसे ही रविवार की सुबह शुरू हुई, एयरपोर्ट के बाहर अफरा-तफरी की तस्वीरें सामने आईं। हजारों यात्री कतारों में खड़े थे, फोन की स्क्रीन पर चमकते हुए रद्द उड़ान संदेशों को अविश्वास भरी नजरों से देखते हुए। किसी के पास मेडिकल इमरजेंसी थी, कोई किसी जरूरी इंटरव्यू के लिए जा रहा था, तो कोई पूरे परिवार के साथ छुट्टी पर निकलने वाला था—लेकिन इन सभी के चेहरों पर वही एक सवाल था कि आखिर इंडिगो अचानक इस तरह कैसे चरमरा गई।

इन अव्यवस्थित हालातों की खबर जब नागरिक उड्डयन मंत्रालय तक पहुँची, तो मंत्रालय ने इसे केवल तकनीकी समस्या नहीं बल्कि यात्रियों की गरिमा और अधिकारों पर सीधा प्रहार माना। दोपहर तक ही चेतावनी जैसी तीखी भाषा में मंत्रालय का आदेश जारी हुआ और उस आदेश में किसी तरह की ढील नहीं थी। उसमें साफ कहा गया कि जो भी उड़ानें रद्द हुईं, जिनकी यात्रा बाधित हुई या जिनकी टिकटें बिना वजह रोक दी गईं—उन सभी का पूरा पैसा आज रात आठ बजे तक हर हाल में लौटा दिया जाए। मंत्रालय ने इंडिगो को यह भी अच्छी तरह समझा दिया कि एक मिनट भी देरी हुई तो कानूनी कार्रवाई से बचने का कोई रास्ता बाकी नहीं बचेगा।

सरकार ने यह भी स्पष्ट रूप से निर्देश दिया कि जिन यात्रियों की उड़ानें उथल-पुथल का शिकार हुईं, उनसे दोबारा बुकिंग करने के नाम पर एक भी रुपया नहीं लिया जाएगा। मंत्रालय के अनुसार, यदि किसी यात्री से पुनः चार्ज लिया गया या किसी भी रूप में असुविधा पहुंचाई गई, तो इसे नियमों का खुला उल्लंघन माना जाएगा। एयरलाइन को यह याद दिलाया गया कि किसी भी परिस्थिति

में संकट का बोझ यात्रियों पर डालना स्वीकार नहीं किया जाएगा।

मंत्रालय के निर्देशों के बाद इंडिगो को एक विशेष सहायता और रिफंड सेल बनाने का आदेश दिया गया, लेकिन यह कोई सामान्य सेल नहीं होगा। उसे सक्रिय होकर खुद यात्रियों से संपर्क करना होगा, उनकी समस्या पूछनी होगी, समाधान देना होगा और सुनिश्चित करना होगा कि यात्रियों को बार-बार कॉल या ईमेल करके अपना पैसा या वैकल्पिक यात्रा मांगने की मजबूरी न हो। सरकार ने साफ कर दिया कि जब तक इंडिगो की उड़ानें पूर्ण रूप से सामान्य न हो जाएं, तब तक एयरलाइन को ऑटोमैटिक रिफंड मोड पर ही कार्य करना होगा—यानी बगैर पूछे पैसा वापस।

सबसे बड़ी समस्या उन यात्रियों के साथ थी जिनका सामान किसी और शहर में अटक गया था या विमान में चढ़ भी नहीं पाया था। मंत्रालय ने कठोर भाषा में कहा कि जिनका भी लगेज "मिसमैनेज्ड" हुआ है, वह 48 घंटे के भीतर हर हाल में उनके घर तक पहुंचाया जाए। यदि किसी कारण से यह प्रक्रिया पूरी नहीं हुई, तो इंडिगो को मौजूदा नियमों के हिसाब से मुआवजा भी देना होगा। कई यात्रियों ने सोशल मीडिया पर शिकायत की थी कि वे अपने हाथों का बैग लिए घूम रहे हैं जबकि उनका मुख्य लगेज किसी दूसरे शहर में पड़ा हुआ है। इन सब शिकायतों को संज्ञान में लेते हुए मंत्रालय ने कहा कि कोई बहाना स्वीकार नहीं किया जाएगा।

सरकार पूरी स्थिति पर बारीकी से नजर बनाए हुए है क्योंकि संकट के इस समय में सबसे ज्यादा परेशान वरिष्ठ नागरिक, बीमार यात्री, छोटे बच्चे, छात्र और वे लोग हुए हैं जिन्हें अत्यावश्यक कारणों से यात्रा करनी थी। दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और हैदराबाद जैसे बड़े एयरपोर्ट्स पर मंत्रालय के निरीक्षक लगातार हालात का जायजा ले रहे हैं ताकि किसी भी यात्री को अपमान या असुविधा का सामना न करना पड़े। दिन भर की हलचल के बाद भी माहौल में तनाव कम नहीं हुआ। लोग इस बात से चिंतित थे कि क्या उनकी अगली उड़ान सच में समय पर चलेगी या फिर यह पूरे हफ्ते भर की नई समस्या बन जाएगी। लेकिन सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह सामान्य स्थितियों को जल्दी से जल्दी बहाल करने के लिए प्रतिबद्ध है, और एयरलाइन को अब यात्रियों की परेशानियों को हलके में लेने की आदत छोड़नी ही होगी।

इंडिगो को दिया गया यह आदेश केवल एक नोटिस नहीं, बल्कि यात्रियों की ताकत और उनके अधिकारों का ऐलान है। सरकार का संदेश एकदम साफ है—जबतक एयरलाइनें अपनी जिम्मेदारी और जवाबदेही समझकर ईमानदारी से काम नहीं करतीं, तब तक उन्हें कठोर निगरानी और दंडात्मक कार्रवाई के लिए तैयार रहना होगा।

डोनाल्ड ट्रंप को मिला पहला फीफा शांति पुरस्कार, फुटबॉल विश्वकप ड्रॉ समारोह में बढ़ी राजनीति बनाम खेल की बहस

(जीएनएस)। वॉशिंगटन की सर्द रात में प्रतिष्ठित कैनेडी सेंटर की रोशनी तब और तेज हो गई, जब फीफा विश्वकप 2026 के ड्रॉ के मंच पर अचानक एक अनोखा दृश्य देखने को मिला—अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को फीफा का पहला शांति पुरस्कार प्रदान किया गया। यह वही ट्रंप हैं, जो खुद को "अनवरत शांति का सबसे बड़ा दूत" बताते हुए लंबे समय से नोबेल शांति पुरस्कार के दावेदार होने का दावा करते रहे हैं। शुक्रवार को आयोजित इस भव्य समारोह में फीफा अध्यक्ष जियानी इन्फेंटिनो ने उन्हें मेडल और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया और कहा कि यह पुरस्कार उन प्रयासों को मान्यता देता है, जो दुनिया में शांति और वैश्विक एकता को बढ़ावा देने का काम करते हैं।

मंच पर ट्रंप हमेशा की तरह आत्मविश्वास से भरे दिखाई दिए। उन्होंने पुरस्कार ग्रहण करते हुए कहा

कि कांगो से लेकर दुनिया के कई संवेदनशील क्षेत्रों में उन्होंने जो भूमिका निभाई है, उससे वैश्विक सुरक्षा मजबूत हुई है और यह सम्मान उनकी जिंदगी के सबसे महत्वपूर्ण पलों में से एक है। व्हाइट हाउस ने भी तुरंत सोशल प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट कर इसे राष्ट्रपति के "शांति के प्रति समर्पण" का प्रतीक बताया।

समारोह के दौरान जब विशाल स्क्रीन पर विश्वकप 2026 की रूपरेखा दिखाई गई—अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको की संयुक्त मेजबानी, 16 शहरों का भव्य आयोजन, और रिकॉर्ड 104 मैचों की घोषणा—तो पूरा माहौल उत्साहित हो उठा। लेकिन ठीक उसी क्षण यह सवाल भी गूंजने लगा कि इतने बड़े खेल आयोजन में राजनीतिक व्यक्तित्व को सम्मान देने का वास्तविक संदेश क्या है?

कई फुटबॉल प्रशंसकों और राजनीतिक विश्लेषकों ने इस कदम को खेल और राजनीति के खतरनाक मिश्रण के रूप में देखा। सोशल मीडिया पर हजारों लोगों ने फीफा पर सवाल उठाए कि वैश्विक खेल संस्थाओं को राजनीतिक हस्तक्षेप से बचना चाहिए, जबकि कई अन्य लोगों ने इसे ट्रंप की उपलब्धियों का स्वाभाविक सम्मान बताया। समारोह स्थल के बाहर भी इस फैसले को लेकर छोटे–बड़े समूहों में बहस छिड़ी रही।

दूसरी ओर, समर्थकों का मानना है कि खेलों का मंच हमेशा से शांति और भाईचारे का संदेश लेकर चलता आया है, और यदि किसी नेता के वैश्विक हस्तक्षेप ने संघर्ष कम करने में योगदान दिया है, तो उसे मान्यता मिलनी चाहिए। लेकिन तमाम चर्चाओं और आलोचनाओं के बीच, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि फीफा शांति पुरस्कार की पहली घोषणा ने विश्वकप 2026 की शुरुआत को वैश्विक स्तर पर विवादों और सुर्खियों के केंद्र में ला खड़ा किया है। जहां मैदान पर खिलाड़ी दुनिया को एकजुट करने वाले क्षण रचते हैं, वहीं उसके बाहर पुरस्कारों और राजनीति की परतें एक नई बहस पैदा कर रही हैं।

अब दुनिया की निगाहें सिर्फ इस बात पर नहीं टिकी होंगी कि 11 जून से शुरू होने वाले 104 रोमांचक मुकाबले किस दिशा में जाते हैं, बल्कि इस पर भी कि फीफा का यह नया कदम खेलों की वैश्विक छवि पर अगले वर्षों में क्या असर डालता है।

सोनमर्ग में फिर लौट रही रौनक, बढ़ती पर्यटक संख्या से घाटी में नई उम्मीदें जागीं

(जीएनएस)। कश्मीर घाटी का मोती कहलाने वाला सोनमर्ग एक बार फिर पर्यटकों से गुलजार हो उठा है। महीनों तक चली सुस्ती, असुरक्षा और पर्यटन कारोबार में आई गिरावट के बाद अब यह हिमालयी स्वर्ग अपनी पुरानी चमक वापस पाता दिखाई दे रहा है। घाटी के स्थानीय गाइड, होटल कारोबारी, घोड़ा-वालों और परिवहन से जुड़े लोग कहते हैं कि लंबे समय के बाद उन्हें ऐसा महसूस हो रहा है जैसे उनकी रोज़ी-रोटी की धड़कनें फिर चलने लगी हों। सुबह की पहली किरण जैसे ही बर्फ से ढकी चोटियों पर गिरती है, सोनमर्ग की वादियां अपने आकर्षण से हर आने वाले को मंत्रमुग्ध कर रही हैं—और यही सौंदर्य एक बार फिर पर्यटकों की भारी आमद को खींच लाने में सफल हो रहा है।

अधिकारियों के अनुसार पिछले दो महीनों में पर्यटकों की जो तेज़ बढ़ोतरी दर्ज की गई है, उसने यह संकेत दे दिया है कि सर्दियों की पहली बर्फबारी शुरू होते ही यहां रफ्तार और भी तेज़ हो जाएगी। अप्रैल के आखिरी सप्ताह से नवंबर तक आए यात्रियों के आंकड़े बताते हैं कि घाटी के पर्यटन मौसम में अब स्थिरता लौट रही है। अप्रैल के अंतिम सात दिनों में जहां 7,209 घरेलू, 341 विदेशी और 832 स्थानीय पर्यटक सोनमर्ग पहुंचे, वहीं मई में यह संख्या लगभग दोगुनी होकर 17,083 घरेलू, 486 विदेशी और 4,004 स्थानीय यात्रियों तक पहुंच गई। जून में गर्मियों का चरम सौंदर्य जैसे ही खिलना शुरू हुआ, पर्यटकों की संख्या 33,692 घरेलू और 14,165 स्थानीय तक उछल गई, हालांकि विदेशी पर्यटक कुछ कम—281—ही रहे। जुलाई की शुरुआत तक सोनमर्ग पूरी तरह रंगीन हो चुका था, और वादियां सैलानियों की आवाजाही से गुलज़ार।

अगस्त के बाद मौसम के बदलने और कुछ स्थानीय घटनाओं की वजह से पर्यटक संख्या में उतार-चढ़ाव आया। सितंबर में घरेलू पर्यटकों की संख्या भले ही घटकर 6,945 रह गई, लेकिन विदेशी पर्यटकों के आंकड़े 422 तक बढ़े। दिलचस्प बात यह रही कि इसी महीने स्थानीय पर्यटकों का आंकड़ा 17,897 दर्ज किया गया, जो यह बताता है कि कश्मीर के भीतर भी सोनमर्ग की ओर आकर्षण तेजी से बढ़ रहा है। अक्टूबर में भी 8,389 घरेलू और 391 विदेशी यात्री पहुंचे, जबकि नवंबर में सर्द हवाओं और शुरुआती बर्फबारी की उम्मीदों के बीच 13,527 घरेलू, 459 विदेशी और 4,084 स्थानीय यात्रियों ने यहां की अद्भुत सुंदरता का आनंद लिया।

पर्यटन कारोबारियों का कहना है कि पहलगाम में हुई घटना के बाद पर्यटन उद्योग को बड़ा झटका लगा था। घाटी में अचानक आए संकट ने न सिर्फ होटल व्यवसाय बल्कि टैक्सी ऑपरेटर, टूर गाइड, घोड़ा-वालों और दर्जनों छोटे–बड़े रोजगारों को प्रभावित किया। कई टूर ऑपरेटर तो हालात से परेशान होकर बैंक से खरीदे वाहन बेचकर घाटा कम करने को मजबूर हो गए थे। लेकिन अब जैसे-जैसे पर्यटक लौट रहे हैं, लोगों में आत्मविश्वास दोबारा जाग रहा है।

स्थानीय व्यापारी कहते हैं कि कश्मीर की धरती में एक अद्भुत शक्ति है—चाहे हालात कितने ही कठिन क्यों न हों, यहां की वादियां अपनी सुंदरता से सबको वापस बुला ही लेती हैं। उन्हें पूरा विश्वास है कि बर्फ गिरने के साथ इस सर्दी सोनमर्ग एक बार फिर देश-दुनिया के सैलानियों का पसंदीदा ठिकाना बनेगा। होटल बुकिंग्स बढ़ने लगी हैं, स्नो-एडवेंचर गतिविधियों की तैयारियां शुरू हो गई हैं और स्थानीय लोगों की आंखों में उम्मीद की वही चमक लौट आई है, जो कई महीनों से गायब थी।

सोनमर्ग की ऊंची चोटियों, बहते नालों और बर्फ से सजती वादियों में जैसे-जैसे ठंडी हवाएं बर्फबारी का संदेश लेकर आ रही हैं, वैसे ही पूरी घाटी की अर्थव्यवस्था में एक नई जान फूंकने की तैयारी दिखाई देती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कश्मीर की असली पहचान उसकी मेहमाननवाजी और प्राकृतिक खूबसूरती है—और अगर मौसम ने साथ दिया तो आने वाले महीनों में सोनमर्ग फिर पर्यटन के नए अध्याय लिखेगा।

रामनाथपुरम तट मार्ग पर भीषण हादसा, अयप्प भक्तों की कार में टक्कर से पाँच श्रद्धालुओं की दर्दनाक मौत

(जीएनएस)। रामनाथपुरम के शांत समुद्री तटों पर रविवार की सुबह उस समय अफरातफरी और चीख–पुकार मच गई, जब सड़क किनारे खड़ी एक कार को तेज रफ्तार से आती दूसरी कार ने जोरदार टक्कर मार दी। यह कार आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम से रामेश्वरम की यात्रा पर निकले पाँच अयप्प भक्तों की थी, जो पूजा-अर्चना के लिए साउथ इंडिया की अपनी पवित्र तीर्थयात्रा पूरी करने जा रहे थे। सुबह का समय था, हवा में हल्की ठंडक थी, और भक्त कुम्बिडुमदुरई के पास समुद्र किनारे अपनी कार थोड़ी देर के लिए रोक रहे थे। तभी कुछ ही सेकंड में परिस्थितियाँ बदल गईं। तेज रफ्तार से आ रही एक कार—जिसे स्थानीय लोगों ने डीएमके नगर मंडल अध्यक्ष से जुड़ा वाहन बताया—ने अचानक नियंत्रण खो दिया और सीधे सड़क किनारे खड़ी श्रद्धालुओं की कार से टकरा गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार का अगला हिस्सा पूरी तरह पिचक गया और भीतर बैठे सभी पाँच भक्त मौके पर ही दम तोड़ बैठे। धक्का इतना प्रचंड था कि आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत पुलिस और आपात सेवाओं को फोन किया। घटनास्थल पर पहुँची पुलिस ने घायल सात लोगों को तुरंत रामनाथपुरम सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेजा, जहाँ उनका इलाज जारी है। डॉक्टरों ने बताया कि कई घायलों की स्थिति गंभीर है और उन्हें लगातार निगरानी में रखा गया है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि तटीय सड़क पर तेज गति से गाड़ी चलाने की समस्या लंबे समय से बनी हुई है। दुर्घटना के बाद गुस्साई भीड़ ने सवाल उठाए कि आखिर ऐसे संवेदनशील मार्गों पर कठोर निगरानी और गति-नियंत्रण उपाय कब लागू होंगे।

माताघाट के जंगल में दहशत की दोपहर : मुठभेड़ के बाद विस्फोटक छोड़कर भागे नक्सली, बालाघाट में बढ़ी हलचल

(जीएनएस)। बालाघाट के शांत और पर्वतीय इलाक़े में शनिवार की दोपहर अचानक गोलियों की आवाज़ गूंजी और घने जंगलों में दहशत फैल गई। छत्तीसगढ़ सीमा से सटे माताघाट क्षेत्र में सुरक्षा बलों की सर्चिंग टीम जैसे ही एक ढलान से नीचे बढ़ी, तभी घात लगाए बैठे नक्सलियों ने ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। कुछ पल के भीतर जंगल का माहौल ऐसा हो गया जैसे वहाँ किसी युद्ध का छोटा-सा मोर्चा खुल गया हो। लेकिन सुरक्षाबलों की त्वरित और संगठित प्रतिक्रिया ने नक्सलियों को टिकने नहीं दिया, और वे अंधाधुंध गोलाबारी के बीच गहरी झाड़ियों का सहारा लेकर भाग निकले।

घटना स्थल से जो सामग्री बरामद हुई, उसने इस पूरे क्षेत्र में नक्सलियों की सक्रियता का एक बार फिर स्पष्ट प्रमाण दे दिया। विस्फोटक, वायर, बैटरियां, दवाइयाँ, कपड़े, राशन और कई दैनिक उपयोग की वस्तुएँ बरामद की गईं—ऐसी वस्तुएँ जो किसी भी सक्रिय नक्सल कैंप की रीढ़ मानी जाती हैं। यह साफ है कि नक्सली पिछले कई दिनों से इस इलाके में डेरा जमाए हुए थे और किसी बड़ी वारदात की तैयारी में थे।

बालाघाट के पुलिस अधीक्षक आदित्य मिश्रा ने मुठभेड़ की पुष्टि करते हुए कहा कि केंद्र सरकार के निर्देश पर जिले में 2026 तक नक्सल उन्मूलन अभियान को मिशन मोड में चलाया जा रहा है। हॉक फोर्स, सीआरपीएफ, कोबरा बटालियन और जिला पुलिस की संयुक्त टीमें लगातार गश्त और सर्च ऑपरेशन के जरिए नक्सलियों पर दबाव बना रही हैं। मुठभेड़ उसी दबाव का प्रत्यक्ष परिणाम है, जहाँ नक्सलियों के पास बस भागने का ही विकल्प बचा।

शनिवार की घटना के पीछे एक और महत्वपूर्ण वजह सामने आई है—ग्रामीणों का रुख बदलना। एसपी मिश्रा बताते हैं कि पिछले कुछ महीनों में ग्रामीणों द्वारा नक्सलियों को दिया जाने वाला सहयोग लगभग खत्म हो गया है। यही कारण है कि नक्सलियों की आपूर्ति श्रृंखला टूटने लगी है और वे लगातार ठिकाने बदलने को मजबूर हो रहे हैं। जंगल में छिपकर चलने वाले संगठनों के लिए राशन, दवाइयाँ, कपड़े और बैटरियों जैसी चीज़ें अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं, और जब यही आपूर्ति संकट में आ जाए तो उनका पूरा तंत्र हिल जाता है।

मुठभेड़ के बाद पुलिस ने इलाके की घेराबंदी कर दी है और रात भर सर्च ऑपरेशन जारी रहेगी। सुरक्षा एजेंसियाँ इस बात का भी पता लगाने की कोशिश कर रही हैं कि क्या नक्सलियों ने किसी गहरी सुरंग, खोह या पहाड़ी दरार में अस्थायी ठिकाने बनाए थे, या वे किसी बड़े दल का हिस्सा थे।

एसपी मिश्रा ने साफ और कड़ी चेतावनी दीः "नक्सलियों के पास अब दो ही रास्ते हैं—या तो आत्मसमर्पण करके मुख्यधारा में लौट आएँ और शासन की पुनर्वास योजनाओं का लाभ लें, या फिर सुरक्षा बलों की कड़ी कार्रवाई झेलने के लिए तैयार रहें।"

बालाघाट जिला 1990 के दशक से नक्सल समस्या से जूझ रहा है। समय-समय पर कई ऑपरेशनों ने नक्सली प्रभाव को कमजोर किया, लेकिन सीमा क्षेत्रों के घने जंगल उन्हें शरण हमेशा देते रहे। अब 2026 तक जिले को पूरी तरह नक्सल-मुक्त बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है और शनिवार की यह कार्रवाई उसी मिशन का महत्वपूर्ण चरण साबित हो रही है।

नेशनल हेराल्ड मामले में बढ़ी हलचल, कर्नाटक के डिप्टी सीएम डी .के . शिवकुमार को ईडी की दोबारा नोटिस, राजनीतिक तूफ़ान तेज

(जीएनएस)। बेंगलुरु की राजनीतिक फिज़ा में शनिवार को अचानक फिर तनाव बढ़ गया, जब नेशनल हेराल्ड प्रकरण में प्रवर्तन निदेशालय ने कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार को एक और नोटिस जारी कर दी। कर्नाटक की गठबंधन सरकार के सबसे प्रभावशाली नेताओं में गिने जाने वाले शिवकुमार ने इस नोटिस की पुष्टि करते हुए इसे सीधे-सीधे राजनीतिक बदले की कार्रवाई बताया।

शिवकुमार का कहना है कि नेशनल हेराल्ड और यंग इंडिया, दोनों संस्थान कांग्रेस की विचारधारा और उसके कठिन दौर से जुड़े रहे हैं। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने आर्थिक चुनौतियों के समय इन संस्थानों की मदद ट्रस्टों के माध्यम से की थी, जो पूरी तरह पारदर्शी प्रक्रिया थी। उन्होंने दावा किया कि ईडी द्वारा मांगे गए सभी दस्तावेज और ब्योरा वे पहले ही सौंप चुके हैं, और इस मामले में चार्जशीट भी दायर हो चुकी है।

इसके बावजूद ईडी और दिल्ली पुलिस का ताजा नोटिस उन्हें 19 दिसंबर तक व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर स्पष्टीकरण देने को कहता है। शिवकुमार का आरोप है कि विपक्ष दबाव बनाकर उन्हें राजनीतिक रूप से कमजोर करना चाहता है और यही वजह है कि पुराने मामलों को बार-बार उछाला जा रहा है।

उपमुख्यमंत्री ने पत्रकारों से बात करते हुए साफ कहा कि वे किसी भी दबाव में झुकने वाले नहीं हैं और मामले का सामना पूरी तरह कानूनी प्रक्रिया के अनुसार करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि जनता इन सब राजनीतिक रणनीतियों और उनके मकसद को अच्छी तरह समझती है।

कर्नाटक की सियासत में पहले ही तनाव का माहौल है, और इस नोटिस ने सत्ता-विपक्ष के बीच टकराव को और तीखा कर दिया है। कांग्रेस इसे राजनीतिक प्रतिशोध बता रही है, जबकि विपक्ष शिवकुमार पर गंभीर वित्तीय अनियमितताओं का आरोप दोहरा रहा है। अब सबकी नजरें 19 दिसंबर पर टिकी हैं, जब शिवकुमार को जांच एजेंसियों के सामने पेश होना है। यह तारीख इस पूरे मामले के अगले अध्याय की दिशा तय कर सकती है।

वेस्टर्न रेलवे द्वारा साबरमती BG ⇌ दिल्ली जंक्शन के बीच सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी।

ट्रेन क्र.	प्रस्थान स्टेशन और गंतव्य	सेवा की तिथियाँ	प्रस्थान	आगमन
09497	साबरमती BG - दिल्ली जंक्शन	07.12.2025 और 09.12.2025	22:55 बजे (रविवार और मंगलवार)	15:15 बजे (दूसरे दिन)
09498	दिल्ली जंक्शन - साबरमती BG	08.12.2025 और 10.12.2025	21:00 बजे (सोमवार और बुधवार)	12:20 बजे (दूसरे दिन)

हॉल्ट: महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, मारवाड़, अजमेर, जयपुर, अलवर, रेवाड़ी, गुड़गांव और दिल्ली कैंट स्टेशन दोनों तरफ।

कम्पोज़िशन: AC 3-टियर कोच।

समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जा सकते हैं।

ट्रेन नंबर 09497 की बुकिंग सभी PRS काउंटर और IRCTC वेबसाइट पर खुली है। ऊपर दी गई ट्रेन स्पेशल ट्रेन के तौर पर स्पेशल किराए पर चलाई जाएगी।

पश्चिम रेलवे
wr.indianrailways.gov.in
हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly
हमें फॉलो करें: X.com/WesternRly

कृपया सभी आरक्षित टिकटों के लिए मूल पहचान पत्र साथ लाएँ।

संपादकीय

पुनरीक्षण पर सुप्रीम मोहर

मतदाता सूचियों की शुद्धता व पारदर्शी चुनावों के लिये चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर की प्रक्रिया को जारी रखने का निर्देश देकर देश की शीर्ष अदालत ने चुनाव आयोग को राहत ही दी है। वहीं दूसरी ओर संसद से सड़क तक एसआईआर के मुद्दे पर सरकार को घेरने की कोशिश में लगे विपक्ष को इस निर्णय से बैकफुट पर आना पड़ेगा। दरअसल, विपक्षी दल बिहार में शुरू हुई एसआईआर प्रक्रिया को लेकर लगातार मुखर विरोध करते रहे हैं और मामला कई बार अदालत तक भी पहुंचा था। लेकिन बिहार में बहुत कम समय में यह काम पूरा हुआ और राज्य में नई सरकार भी चुन ली गई है। हालिया प्रक्रिया की कथित विसंगतियों के बाबत सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस सूर्यकांत के नेतृत्व वाली बेंच ने स्पष्ट किया कि राज्य सरकारों के कर्मचारी एसआईआर व अन्य वैधानिक दायित्वों के निर्वहन के लिये बाध्य हैं। वहीं कोर्ट ने राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों की सरकारों को निर्देश दिए हैं कि एसआईआर में लगे बूथ लेवल अधिकारियों पर काम का दबाव कम करने के लिए तुरंत कदम उठाएं। इसके लिये अतिरिक्त कर्मचारियों की नियुक्ति करने को कहा गया है। उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों विशेष गहन पुनरीक्षण में लगे कई बीएलओ के तनाव से मरने व आत्महत्या करने के समाचार आए थे। जिसके चलते चुनाव आयोग ने विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया को एक सप्ताह के लिये आगे बढ़ाया था। वहीं दूसरी ओर अदालत ने स्पष्ट किया कि एसआईआर को लेकर चुनाव आयोग के अधिकारों को चुनौती नहीं दी जा सकती। यह भी कि चुनाव आयोग एक संवैधानिक संस्था है और उसके पास मतदाता सूचियों में पारदर्शिता लाने के लिये एसआईआर को अंजाम देने के संवैधानिक व कानूनी अधिकार हैं। साथ ही अदालत ने इस प्रक्रिया पर किसी तरह की रोक लगाने से इनकार किया। इसके अलावा अदालत का कहना था कि यदि भविष्य में किसी तरह की अनियमितता सामने आती है तो तुरंत कार्रवाई के आदेश दिए जाएंगे।

निस्संदेह, विगत में भी देश में समय-समय पर मतदाता सूचियों में पुनरीक्षण का कार्य होता रहा है। लेकिन यह कभी इतना बड़ा राजनीतिक विरोध का मुद्दा नहीं बना। बहरहाल, अदालत के इस आदेश के बाद विशेष गहन पुनरीक्षण को मुद्दा बनाकर विरोध करने वाले राजनीतिक दलों को झटका अवश्य लगा होगा। हालांकि, इससे पहले भी अदालत ने बिहार में विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया पर रोक लगाने से इनकार किया था। साथ ही उससे जुड़ी विसंगतियों को दूर करने को जरूरी निर्देश अवश्य दिए थे। जहां तक बूथ लेवल अधिकारियों पर काम के दबाव का सवाल है तो निश्चित ही यह एक श्रम साध्य कार्य है। इस काम में लगे शिक्षकों व अन्य कर्मचारियों को विशेष गहन पुनरीक्षण से जुड़े दस्तावेजों के प्रमाणीकरण और शिकायतों के निवारण में खासी माथापच्ची करनी पड़ती है। इसलिए बीएलओ के काम के बोझ को कम करने का प्रयास करना बेहद जरूरी है। जिसके लिये कर्मचारियों की संख्या तुरंत बढ़ाने की जरूरत है, जिससे बीएलओ का काम का बोझ कम हो सके। उन्हें साप्ताहिक अवकाश लेने का अवसर मिल सके। निस्संदेह, सार्वजनिक जीवन में राष्ट्रीय दायित्व का निर्वहन नियुक्त कर्मचारियों के लिये अपरिहार्य है। ऐसी ही जटिलता का सामना कर्मचारियों को जनगणना आदि कार्यक्रमों व स्वास्थ्य से जुड़े मिशनों में करना पड़ता है। घर-घर जाना और लोगों की तल्ख प्रतिक्रियाओं का भी सामना करना पड़ सकता है। वहीं विशेष गहन पुनरीक्षण का विरोध कर रहे राजनीतिक दलों का भी दायित्व है कि वे अपने दल के बूथ स्तरीय अधिकारियों को बीएलओ की मदद करने को प्रेरित करें। महज सत्ता पक्ष की नीतियों के विरोध के लिये विरोध करना स्वस्थ लोकतंत्र के हित में नहीं कहा जा सकता। विपक्ष को लोकतंत्र के हित में विरोध के साथ रचनात्मक सहयोग भी करना चाहिए। लोकतंत्र को संबल देने वाली विशेष गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया को सफल बनाने में जहां सरकारी कर्मचारियों की बड़ी भूमिका है, वहीं राजनीतिक दलों व आम नागरिकों के भी दायित्व हैं। नागरिकों को राष्ट्रीय कार्यों में नागरिक धर्म का भी निर्वाह करना चाहिए। आम लोगों की सजगता व सक्रियता बूथ लेवल अधिकारियों के बोझ को कुछ कम जरूर कर सकती है।

रक्षा खरीददार से रक्षा साझेदार बन गया भारत

India-Russia के नये समझौतों को लेकर दुनियाभर में बेचैनी

> भारत–रूस व्यापार में भारी असंतुलन (रूस से ऊर्जा आयात अधिक) को देखते हुए रूस ने भारतीय वस्तुओं को अधिक बाज़ार पहुँच देने पर सहमति जताई है। दोनों देशों का लक्ष्य है कि 2030 तक व्यापार 100 अरब डॉलर तक पहुँचाया जाए।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की भारत यात्रा ने ऊर्जा, रक्षा, परमाणु सहयोग, आतंकवाद-रोधी रणनीति और आर्थिक साझेदारी जैसे अनेक क्षेत्रों में नई दिशा दी है। यह यात्रा उस समय हुई जब अमेरिका ने रूस की तेल कंपनियों रोसनेफ्ट और लुकऑइल पर कड़े प्रतिबंध लगाए थे और भारत पर रूसी तेल आयात कम करने का दबाव बढ़ा रहा था। इस पृष्ठभूमि में पुतिन का संदेश स्पष्ट था कि रूस भारत के लिए ऊर्जा का "विश्वसनीय स्रोत" बना हुआ है और बना रहेगा।हम आपको बता दें कि PM मोदी और पुतिन की संयुक्त प्रेस वार्ता में रूसी राष्ट्रपति ने कहा कि रूस भारत की तीव्र गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था को आवश्यक तेल, गैस और कोयले की निरंतर आपूर्ति के लिए प्रतिबद्ध है। उल्लेखनीय है कि रूस दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल उत्पादक और गैस भंडार वाला देश है और पुतिन ने यह भी संकेत दिया कि पारंपरिक ऊर्जा से आगे बढ़कर दोनों देश परमाणु ऊर्जा में भी सहयोग बढ़ाएँगे जिसमें छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर, फ्लोटिंग न्यूक्लियर प्लांट तथा चिकित्सा एवं कृषि क्षेत्र में परमाणु तकनीकों का उपयोग शामिल है। इसके अलावा, भारत और रूस ने कुडनकुलम परमाणु परियोजना की प्रगति की समीक्षा की और भारत में एक दूसरे परमाणु संयंत्र स्थल पर चर्चा आगे बढ़ाई। यह भारत की दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा में निर्णायक योगदान देगा।

इसके अलावा, इस यात्रा की सबसे रणनीतिक उपलब्धि रक्षा क्षेत्र में संयुक्त निर्माण को बढ़ावा देना रही। रूस ने भारत में ही अपने हथियारों और सैन्य प्लेटफॉर्म्स के स्पेयर पार्ट्स और उपकरणों का उत्पादन करने पर सहमति दी। दोनों पक्षों ने उन्नत रक्षा प्रणाली के संयुक्त सह-विकास और सह-उत्पादन को पुनर्जीवित करने का निर्णय भी लिया। भारतीय सेनाओं की जरूरतों को देखते हुए संयुक्त उद्यमों से तीसरे देशों को निर्यात की

संभावना भी टटोली गई। हम आपको बता दें कि यह पहली बार है जब रूस ने स्पष्ट रूप से Make in India के तहत अपने रक्षा परिवेश को भारत में शिफ्ट करने की दिशा में ठोस प्रतिबद्धता जताई है। उल्लेखनीय है कि सशस्त्र बलों की यह लंबे समय से शिकायत रही है कि रूस से महत्वपूर्ण पुर्जों और उपकरणों की आपूर्ति में काफी समय लगता है, जिससे देश से खरीदी गई सैन्य प्रणालियों का रखरखाव प्रभावित होता है। इस संबंध में भारत और रूस द्वारा जारी संयुक्त वक्तव्य में कहा गया, ''दोनों पक्ष प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के माध्यम से 'मेक-इन-इंडिया' कार्यक्रम के तहत रूसी हथियारों और रक्षा उपकरणों के रखरखाव के लिए पुर्जों, घटकों और अन्य उत्पादों के भारत में संयुक्त विनिर्माण को प्रोत्साहित करने पर सहमत हुए।'' संयुक्त वक्तव्य के अनुसार, दोनों पक्ष भारतीय सशस्त्र बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संयुक्त उद्यम स्थापित करने तथा पारस्परिक रूप से मित्रवत तीसरे देशों को निर्यात करने पर भी सहमत हुए। संयुक्त वक्तव्य में कहा गया है कि भारत-रूस रक्षा साझेदारी को उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकी और प्रणालियों के संयुक्त सह-विकास और सह-उत्पादन के लिए पुनः शुरू किया जा रहा है। हम आपको यह भी बता दें कि दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों की बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनके रूसी समकक्ष आंद्रे बेलौसोव ने द्विपक्षीय रक्षा सहयोग बढ़ाने का संकल्प लिया। बैठक में भारतीय पक्ष ने अपनी युद्धक क्षमता को बढ़ाने के लिए रूस से एस-400 मिसाइल प्रणालियों की अतिरिक्त खेपों की खरीद में गहरी रुचि दिखाई।

इसके अलावा, भारत–रूस व्यापार में भारी असंतुलन (रूस से ऊर्जा आयात अधिक) को देखते हुए रूस ने भारतीय वस्तुओं को अधिक बाज़ार पहुँच देने पर सहमति जताई है। दोनों देशों का लक्ष्य है कि 2030 तक व्यापार 100 अरब डॉलर तक पहुँचाया जाए। साथ ही INSTC कॉरिडोर जैसे वैकल्पिक व्यापार मार्गों पर भी प्रगति का संकेत मिला।

साथ ही दोनों देशों ने पहलगाम और मॉस्को के क्रोकस सिटी हॉल में हुए हमलों का संदर्भ लेते हुए आईएसआईएस, आईएसकेपी और अन्य वैश्विक आतंकी नेटवर्क पर सख्त कार्रवाई की मांग की। ''ज़ीरो टॉलरेंस'' नीति और ''दोहरे मानदंडों को अस्वीकार'' करने पर जोर दिया गया।

इसके अलावा, पुतिन ने भारत–रूस मैत्री को ''साथ चलेंगे, साथ बढ़ेंगे'' जैसे भारतीय कथन से अभिव्यक्ति दी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की ओर से दिये गये राजकीय भोज में भारतीय–रूसी संगीत और विविध व्यंजनों ने सांस्कृतिक जुड़ाव को भी प्रकट किया। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दी गई कश्मीरी केसर, असम की चाय और गीता जैसी भेंटें इस साझेदारी की भावनात्मक गहराई को दर्शाती हैं।

देखा जाये तो रूसी राष्ट्रपति की यह यात्रा दर्शाती है कि भारत अब केवल हथियार खरीदने वाला नहीं बल्कि सह-निर्माण और सह-विकास करने वाला रणनीतिक साझेदार बन चुका है। इसके तीन प्रमुख पहलू विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। पहला है रक्षा सहयोग का बदलता स्वरूप। हम आपको याद दिला दें कि शीतयुद्ध से लेकर 2010 तक भारत–रूस रक्षा संबंध मुख्यतः उपकरण खरीद तक सीमित थे। इससे दो समस्याएँ जन्म लेती थीं। पहली थी स्पेयर पार्ट्स की देर से आपूर्ति और दूसरी थी तकनीकी निर्भरता। इस यात्रा के दौरान पुतिन का यह कहना कि रूस का यह मानना है कि महत्वपूर्ण पुर्जों का उत्पादन भारत में ही होना चाहिए, दोनों देशों के संबंधों में संरचनात्मक बदलाव की घोषणा है। इस बदलाव का अर्थ है लॉजिस्टिक स्वतंत्रता, 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य की वास्तविक प्रगति और भारत का रक्षा निर्यातक बनने की दिशा में नया कदम।

देखा जाये तो रूस का यह झुकाव केवल राजनीतिक सद्भाव का परिणाम नहीं, बल्कि बदलती वैश्विक भू-राजनीति की जरूरत भी है। रूस को पश्चिमी प्रतिबंधों के बीच भरोसेमंद बाजार चाहिए, वहीं भारत को ऐसी महाशक्ति सहयोगी चाहिए जिसकी तकनीक और रणनीतिक लचीलेपन से उसकी सामरिक क्षमता में वृद्धि हो।

इसके अलावा, भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी रक्षा। अमेरिका के दबाव के बीच रूस द्वारा निरंतर आपूर्ति का आश्वासन देने का संदेश स्पष्ट है कि भारत अपनी ऊर्जा नीति में रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखेगा। परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में SMR (Small Modular Reactors) और फ्लोटिंग प्लांट जैसी भविष्य की तकनीकों पर बातचीत दर्शाती है कि दोनों देश परंपरागत साझेदारी को हाई-टेक सहयोग में बदल रहे हैं। INSTC जैसे वैकल्पिक व्यापार मार्ग वैश्विक शक्ति-प्रतिस्पर्धा के युग में भारत को एक स्थलीय–समुद्री संतुलन प्रदान करेंगे।

पुतिन की भारत यात्रा के वैश्विक प्रभावों को देखें तो सामने आता है कि यह केवल दो देशों की साझेदारी का कार्यक्रम नहीं, बल्कि विश्व राजनीति का संकेत भी है। जब अमेरिका रूस पर प्रतिबंध बढ़ा रहा है और चीन आक्रामक उभार पर है, तब भारत–रूस समीकरण एक स्थिर धुरी की तरह उभर रहा है। BRICS में 2026 में भारत की अध्यक्षता के साथ यह साझेदारी वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक मंचों पर नए संतुलन बना सकती है। साथ ही यह भी स्पष्ट हो गया है कि भारत अब वह देश नहीं रहा जो केवल SO-30, MiG, या टैंक आयात करे, अब वह निर्माण, सह-विकास और निर्यात की दिशा में बढ़ रहा है। रूस द्वारा पहली बार तीसरे देशों को संयुक्त निर्यात का प्रस्ताव इस परिवर्तन की पुष्टि करता है। इससे भारत के रक्षा उद्योग का विस्तार होगा, रोजगार और तकनीकी क्षमता बढ़ेगी और भारत एक 'टेक्नोलॉजी टेकर' से 'टेक्नोलॉजी पार्टनर' बनेगा। बहरहाल, पुतिन की यह यात्रा भारत–रूस रिश्तों के तीसरे युग की शुरुआत है, जहाँ रक्षा, ऊर्जा, परमाणु, आतंकवाद-रोधी सहयोग और व्यापार, सब एक संयुक्त उत्पादन–निर्माण मॉडल में बंध रहे हैं। वैश्विक शक्ति संतुलन के दौर में यह साझेदारी भारत को रणनीतिक स्वायत्तता, तकनीकी उन्नयन और बहुध्रुवीय विश्व में प्रभाव बढ़ाने में सक्षम बनाती है।

प्रेरणा

अटूट लगन का दीपक

बहुत समय पहले की बात है। यूरोप के एक शांत से शहर में एक साधारण परिवार में जन्मा एक लड़का था—अल्बर्ट। बचपन से वह दूसरों से थोड़ा अलग था। वह कम बोलता था, पर दुनिया को एक अजीब नज़रों से देखता था, जैसे हर चीज़ में कोई छुपा हुआ रहस्य हो जो बस उसे बुला रहा हो कि आओ मुझे पकड़ो, मुझमें छिपे रहस्य को खोलो। परंतु उसके इस स्वभाव को लोग उसकी कमजोरी समझते। स्कूल के दिनों में उसे गणित से बहुत डर लगता था। जब भी सवालों की कॉपी सामने आती, उसके हाथ काँपने लगते, माथे पर पसीना छलक आता और अध्यापक की तेज़ आवाज़ उसके भीतर गूंजती—"अल्बर्ट, तुम इतने सरल सवाल भी क्यों नहीं कर पाते?"

क्लास के बच्चे उसका उपहास उड़ाते। कभी कोई कहता, "देखो, फिर फेल हो जाएगा।" कोई हँसता—"भविष्य में क्या करेगा? गणित नहीं आता, विज्ञान क्या समझेगा?" उन तानों से वह भीतर से टूट जाता। देर रात अपनी कॉपी के पन्नों में सिर छिपाकर वह रोता था। उसे लगता था कि शायद दुनिया सही कह रही है—शायद वह किसी लायक नहीं है। उसके अंदर का आत्मविश्वास धुंध की तरह गायब होता जाता। लेकिन जीवन में एक ऐसा क्षण आता है जब मनुष्य अपने भीतर कहीं खोई हुई एक छोटी सी लौ को अचानक जलता हुआ जानता है। उसके जीवन में यह क्षण एक साधारण-सी शाम को आया।

उस दिन भी वह गणित की कॉपी लेकर उदास बैठा था। उसके पिता ने उसे चुपचाप देखा और पास बैठकर बोले—"बेटा, मुश्किलें डराने नहीं आतीं, वे हमें हमारी ताकत पहचानने आती हैं।" उनके शब्द उसके मन में उतर गए। उस रात अल्बर्ट देर तक जागता रहा और अपनी सारी असफलताओं को धीरे-धीरे याद करता हुआ सोचने लगा कि क्या वास्तव में वह इतना कमजोर है? क्या वह सच में वह लड़का है जो दूसरों की हँसी से डरकर अपने सपने छोड़ दे? तभी जैसे भीतर से किसी ने कहा—"नहीं।" यही 'नहीं' उसकी जिंदगी का दिशा–बदलने वाला क्षण था।

उसने उसी रात एक निर्णय लिया—वह गणित से नहीं भागेगा। चाहे जितना कठिन हो, चाहे कितनी बार असफल होना पड़े, वह डटेगा। उसी क्षण उसकी लगन का दीपक जल उठा। अगले दिन उसने गणित की किताब खोली और पहली बार डर नहीं आया। हाँ, कठिनाई जरूर महसूस हुई, पर अब उसे लगा कि यह कठिनाई उसके सामने पहाड़ बनकर नहीं खड़ी, बल्कि सीढ़ियों की तरह है—जिसे धीरे-धीरे चढ़ा जा सकता है। उसने रोज़ अभ्यास शुरू किया। जहाँ पहले वह एक सवाल को देखकर घबरा जाता था, वहीं अब वह उसे बार-बार हल करता, गलत होता, फिर कोशिश करता, फिर गलत होता, फिर भी हार नहीं मानता।

उसकी यह तपस्या कई महीनों तक चली। धीरे-धीरे गणित के सवाल उसके दोस्त बनने लगे। जो पेचीदा सूत्र पहले उसे डराते थे, वे अब उसे नए रहस्य बताते। जो समीकरण पहले दुश्मन लगते थे, अब उसके मन में नए विचारों का मार्ग खोलते। उसके शिक्षक भी यह परिवर्तन देखकर हैरान थे। क्लास के वही बच्चे जो कभी उस पर हँसते थे, अब चुपचाप देखते—कैसे एक बार डरा हुआ लड़का अब आत्मविश्वास से भरा हुआ, गंभीर, शांत और केंद्रित होकर किताबों में डूबा रहता।

समय बीता, और वही लड़का जिसने कभी गणित से डरकर रोया था, वही लड़का दुनिया का महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन बन गया। उसकी लगन का फल था कि उसने ब्रह्मांड के नियमों को समझने के नए द्वार खोल दिए। समय, प्रकाश, ऊर्जा, गुरुत्व—सबके रहस्य उसने नए सिरे से लिखे। उसके सिद्धांतों ने दुनिया के विज्ञान को बदल दिया। परंतु यदि कोई उससे पूछता कि उसकी महानता का रहस्य क्या है, तो वह केवल एक ही शब्द कहता—"लगन।" वह हमेशा मुस्कुराकर कहता था—"मुझे महान नहीं, मेरी लगन महान बना गई।"

कहा जाता है कि एक बार एक युवक उसके पास आया और बोला, "दुनिया आपको प्रतिभाशाली, महान और असाधारण कहती है। कृपया बताइए, महान बनने का मंत्र क्या है?" आइंस्टीन हल्की मुस्कुराहट के साथ बोले—"लगन।" युवक ने फिर पूछा, "लेकिन लगन क्या? और कैसे?" इस पर आइंस्टीन ने अपने जीवन की वही कहानी सुनाई—कैसे वह गणित से डरता था, कैसे वह असफल होता था, कैसे लोग उसका मज़ाक उड़ाते थे, और कैसे सिर्फ एक निर्णय ने उसका जीवन बदल दिया—'मैं हार नहीं मानूंगा।'

युवक की आँखें चमक उठीं। उसने महसूस किया कि महानता कोई वरदान नहीं, कोई चमत्कार नहीं—महानता रोज़–रोज़ की छोटी-छोटी कोशिशों से जन्म लेती है, जहाँ इंसान अपनी कमजोरी को पहचानकर उसे हराने के लिए कदम बढ़ाता है। उसने आइंस्टीन के चरणों में सिर झुकाकर कहा—"धन्यवाद, आपने मेरी राह दिखा दी।" और वह वहाँ से आगे बढ़ गया, लेकिन उसके भीतर भी उसी क्षण एक दीपक जल चुका था—लगन का दीपक।

जीवन में जब भी असफलता आए, जब भी लोग हँसें, जब भी लगे कि दुनिया बहुत कठिन है, तब बस इस कहानी को याद रखना। हर महान इंसान कभी ना कभी असफल रहा है, किसी न किसी बात से डरता रहा है। फर्क सिर्फ इतना है कि उसने हार नहीं मानी, वह डटा रहा। आप भी अपने भीतर उस अटूट लगन का दीपक जला लो। यक़ीन मानिए, रास्ते अपने आप जगमगाने लगेंगे।

'कस्टमर केयर' का असली मतलब: फिनएयर की वो उड़ान और भारतीय एविएशन का सच

अक्सर हम सोचते हैं कि यूरोप के नॉर्डिक देश 'हैप्पीनेस इंडेक्स' में हमेशा ऊपर क्यों रहते हैं? इसका जवाब मुझे किसी किताब में नहीं, बल्कि हेलसिंकी एयरपोर्ट पर एक अनुभव से मिला। आज जब भारत में इंडिगो के संकट को लेकर हर तरफ अफरा-तफरी मची है, तो यह किस्सा सुनाना और भी जरूरी हो जाता है।

बात उन दिनों की है जब मैं अपनी रिसर्च के सिलसिले में दिल्ली से नॉर्थ पोल की ओर आर्कटिक सर्कल के पास गया हुआ था। कई दिनों की भागदौड़ और काम की थकान के बाद, जब मैं वापसी के लिए हेलसिंकी-वांता (Helsinki-Vantaa) एयरपोर्ट पहुंचा, तो बस घर पहुंचने की जल्दी थी, लेकिन काउंटर पर पहुंचते ही एक बुरी खबर मिली-तकनीकी कारणों से क्रू लंदन में फंस गया था और मेरी फिनएयर की दिल्ली जाने वाली फ्लाइट रद्द हो चुकी थी।

एक आम यात्री की तरह मेरा पारा चढ़ना स्वाभाविक था। इससे पहले कि मैं चेक-इन काउंटर पर अपनी नाराजगी जाहिर करता, वहां की कस्टमर रिलेशनशिप मैनेजर तुरंत मेरे पास आईं। उनके चेहरे पर झुंझलाहट नहीं, बल्कि समाधान का भाव था। उन्होंने मेरे हाथ में 22 यूरो का एक वाउचर थमाया और बेहद विनम्रता से कहा, 'सर, जब तक हम आपके लिए कोई दूसरा विकल्प तैयार करते हैं, आप कृपया कुछ खा-पी लीजिए।'

गुस्सा पिघल गया। मैं लाउंज में गया, स्नैक्स खाए, चॉकलेट्स खरीदीं और एक घंटे बाद वापस काउंटर पर लौटा। मेरा इंतजाम हो चुका था - हेलसिंकी से बैंकॉक और वहां से एयर इंडिया के जरिए दिल्ली। उड़ान में बस तीन घंटे बाकी थे, लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई। जाते-जाते उन्होंने मुझे एक कार्ड दिया, जिस पर एक ईमेल एड्रेस और 'यूरोपियन एविएशन ला' का हवाला था। उन्होंने कहा, 'सर, हुई असुविधा के लिए आप मुआवजे के हकदार हैं। बस अपने डाक्युमेंट्स हमें मेल कर दीजिएगा।'

भारत लौटने के कुछ दिन बाद मैंने औपचारिकता पूरी कर दी। करीब दो महीने बाद मुझे फिनएयर से एक मेल आया। उसमें फ्लाइट रद्द होने के लिए कई बार माफी मांगी गई थी और अंत में एक कूपन कोड था। ऑफर था- या तो कैश ले लें, या फिर फ्यूचर फ्लाइट बुकिंग के लिए वाउचर और अगर मैं वाउचर चुनता, तो उसकी वैल्यू डेढ़ गुना, यानी 950 यूरो!

मैं आज भी बैठकर हिसाब लगाता हूँ तो हैरान रह जाता हूँ। एक यात्री को संतुष्ट करने के लिए उस एयरलाइन ने क्या कुछ नहीं कियाः

हेलसिंकी-बैंकॉक-दिल्ली का तत्काल टिकट (कीमत लगभग 1 लाख रुपये)।

950 यूरो का फ्लाइट वाउचर (कीमत लगभग 1 लाख रुपये) और 22 यूरो का नाश्ता अलग से।

अब, जरा अपनी वर्तमान स्थिति को देखिए। आज भारत के हर एयरपोर्ट पर हाहाकार मचा है। हमारे यहां 'कस्टमर केयर' सिर्फ टोल-फ्री नंबरों पर लिखा होता है, व्यवहार में नहीं झलकता। इसका सबसे बड़ा कारण है- प्रतिस्पर्धा का खत्म होना।

जिस तरह आज घरेलू उड़ानों के 65% हिस्से पर इंडिगो का एकछत्र राज है, ठीक वैसे ही जैसे टेलीकॉम में जियो का दबदबा है। जब बाजार में विकल्प खत्म हो जाते हैं, तो ग्राहक की अहमियत भी खत्म हो जाती है। किसी भी व्यवस्था या सरकार को घुटनों पर लाने के लिए संचालन में बस दो दिन की गड़बड़ी ही काफी होती है और उसका खामियाजा हम जैसे आम यात्रियों को भुगतना पड़ता है।

अभियान

वह अदृश्य शक्ति जो साधक को समृद्धि, आकर्षण और सिद्धि के संसार में प्रवेश करा देती है

असम के नील पहाड़ों के बीच घने जंगलों और शांत हवा से घिरे नीलगिरि पर्वत पर स्थित कामाख्या शक्तिपीठ को साधकों की भूमि कहा जाता है। कहा जाता है कि यहां ऐसी अदृश्य ऊर्जाएं प्रवाहित होती हैं जिनका प्रभाव साधक के मन, जीवन और भाग्य को पूरी तरह बदल सकता है। कामाख्या केवल एक देवी नहीं, बल्कि चेतना का वह आदिम रूप हैं जिसे दुनिया की हर शक्ति का स्रोत माना गया है। तांत्रिक परंपराओं के अनुसार जब कोई व्यक्ति कामाख्या के बीज मंत्र का जाप करता है, तो वह अपने भीतर उसी आदिशक्ति को जाग्रत करता है, उसी ऊर्जा को, जिससे सृष्टि का विस्तार हुआ।

कहा जाता है कि हजारों वर्ष पहले ऋषि मत्स्येंद्रनाथ और गोरखनाथ जैसे सिद्ध योगियों ने कामाख्या पीठ में लंबे समय तक तप किया था। इस स्थान पर साधना करने वाले कई योगियों ने मनोकामना सिद्धि, आकर्षण सिद्धि, व्यवसाय में अचानक वृद्धि, वाणी में चमत्कार जैसी अद्भुत घटनाओं का अनुभव किया। इन सबका स्रोत एक ही माना गया — मां कामाख्या का बीज मंत्र। यह मंत्र अत्यंत गूढ़ है, लेकिन

इसकी ध्वनियां मनुष्य के भीतर सुप्त शक्तियों को जगाती हैं। मंत्र इस प्रकार है —

।। क्लीं क्लीं कामाख्या क्लीं क्लीं नमः ।।

कहा जाता है कि 'क्लीं' ध्वनि ब्रह्मांड की आकर्षण शक्ति को जाग्रत करती है। जैसे चुंबक लोहा खींच लेता है, वैसे ही यह मंत्र साधक के जीवन में अवसरों, धन, प्रेम, सम्मान और सफलता को आकर्षित करना शुरू कर देता है। पुराने तांत्रिक ग्रंथों में लिखा है कि कामाख्या मंत्र केवल जप नहीं—एक कंपन है जिसे जैसे-जैसे साधक दोहराता है, उसके चारों तरफ अदृश्य ऊर्जा का मंडल बनना शुरू हो जाता है।

कई प्राचीन साधकों ने वर्णन किया है कि 41 दिनों तक लगातार इस मंत्र का जाप करने पर साधक के जीवन में ऐसी घटनाएं होने लगती हैं जिनका तर्क से कोई संबंध नहीं होता—अचानक काम बन जाने लगते हैं, धन के नए स्त्रोत खुलने लगते हैं, असंभव कार्य भी साधक के लिए सरल हो जाते हैं। यह उसी ऊर्जा की कृपा मानी जाती है जिसे मां कामाख्या की शक्ति कहा गया है।

साधना शुरू करने से पहले शरीर, मन और आहार की पवित्रता को अनिवार्य माना गया है। कामाख्या परंपरा कहती है कि मंत्र का असर तभी होता है जब साधक अपने भीतर की अशुद्धियों को धीमे-धीमे शांत करता है, क्रोध, वासना, अव्यवस्थित विचारों और अनुचित भोजन से दूर रहता है। साधक को प्रातःकाल अंधकार के समाप्त होने और प्रकाश के उगने के बीच का समय सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। इस समय वातावरण में ऐसी शांति होती है जो मन को मंत्र के साथ एकाकार कर देती है। लहसुन-प्याज, मसालेदार भोजन और मांस से दूर रहना आवश्यक बताया गया है, क्योंकि ये पदार्थ तामसिक ऊर्जा बढ़ाते हैं और मंत्र के सूक्ष्म प्रभाव को कम कर देते हैं। साफ जल से स्नान के बाद साधक रुद्राक्ष की 108 दानों की माला लेकर माता कामाख्या का चित्र या मशाल रूप कल्पना करके बैठता है। फिर गहरी सांस लेकर वह धीरे-धीरे मंत्र का कंपन अपने भीतर प्रवाहित करता है। कई साधकों ने अनुभव किया है कि कुछ ही दिनों में भीतर एक अनोखे आत्मविश्वास का उदय होने लगता है। मन के डर और भ्रम दूर होने लगते हैं, जैसे कोई अदृश्य शक्ति आपके आसपास सुरक्षा का घेरा बना रही हो। यह मंत्र साधक को न केवल मानसिक शक्ति देता है बल्कि उसकी रचनात्मकता, सोच, कार्यक्षमता और निर्णय-शक्ति भी तेज करने लगता है।

कामाख्या साधना का सबसे बड़ा चमत्कार यह माना गया है कि यह साधक के आकर्षण को बढ़ा देती है। यह आकर्षण केवल शारीरिक नहीं—बल्कि वाणी, व्यक्तित्व और आभा तक फैल जाता है। लोग साधक की ओर खिंचने लगते हैं, उसके कामों में सहयोग करने लगते हैं, अचानक उसका प्रभाव बढ़ जाता है। कई राजा, व्यापारी और योद्धा इस मंत्र को गुप्त रूप से करते थे ताकि उनका प्रभाव और सत्ता बनी रहे।

मंत्र जप के बाद सरल फल, मेवे और दूध की मिठाई का भोग माता को अर्पित किया जाता है और अंत में वह प्रसाद रूप में ग्रहण किया जाता है। यह माना गया है कि जब साधक अपने द्वारा चढ़ाया गया भोग स्वयं ग्रहण करता है, तो उस प्रसाद में माता की दिव्य ऊर्जा प्रवेश कर जाती है और वह साधक के शरीर में पहुंचकर उसे और शक्तिशाली बनाती है। इस मंत्र का सबसे बड़ा वरदान मनोकामना सिद्धि बताया गया है। चाहे धन की इच्छा हो, व्यापार में वृद्धि, प्रेम की सफलता, विवाह का योग, मान-प्रतिष्ठा, गुप्त शक्तियां या जीवन में कोई भी बाधा—मां कामाख्या का बीज मंत्र साधक के जीवन में मार्ग खोलने लगता है।

कहा जाता है कि जब साधक 41 दिनों तक बिना रुके मंत्र करता है, तो रात को सोते समय भी उसके चारों ओर एक ऊर्जा-वृत्त बना रहता है जो जीवन की दिशा बदल देता है। कई साधकों ने 41वें दिन चमत्कारिक सपने देखे, किसी ने मनचाहा अवसर पाया, किसी का रुका हुआ पैसा लौट आया, किसी की कठिन समस्या अचानक हल हो गई। यह सब मां कामाख्या की ऊर्जा का प्रत्यक्ष प्रभाव माना गया है। कामाख्या बीज मंत्र केवल पूजा नहीं—अपने भीतर की सुप्त शक्तियों को जाग्रत करने की प्रक्रिया है। यह साधक को भीतर से बदलता है, उसके आत्मविश्वास को प्रज्वलित करता है और उसके जीवन को समृद्धि, शक्ति और सफलता की ओर ले जाता है। यदि आप चाहें, तो मैं इसे और भी लम्बी, कथा-आधारित रहस्यपूर्ण शैली में विस्तार कर दूँ, या इसे ऐतिहासिक-त्रिकोणीय, तांत्रिक परंपरा, देवी-पुराण और साधकों की कथाओं से जोड़कर और अधिक शक्तिशाली व रोचक बना सकता हूँ।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

कच्छ के भुजोडी गांव के 46 बुनकरों ने हासिल किया राष्ट्रीय सम्मान

VGRC में कच्छ की विरासत को नई पहचान दिलाने के लिए प्रतिबद्ध

▸▸ राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता भुजोडी के बुनकर आज भी प्राचीन हस्तकरघा कला को आधुनिक दौर में जीवंत बनाए हुए हैं

▸▸ "कला ही जीवन है": VGRC के माध्यम से भुजोडी के बुनकरों को मिलेगा वैश्विक सफलता का मार्ग

(जीएनएस)। गांधीनगर : कच्छ का भुजोडी गाँव पारंपरिक कारीगरी का एक जीवंत और सशक्त केंद्र है। यह गाँव अपने 46 राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शिल्पियों के लिए देशभर में प्रसिद्ध है। इस समृद्ध शिल्प विरासत में 6 संत कबीर पुरस्कार प्राप्तकर्ता, 20 राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता, 1 शिल्प गुरु, 4 कला-निधि पुरस्कारधारी और हैंडलूम–हस्तकला क्षेत्र में विभिन्न राज्य पुरस्कार प्राप्त करने वाले बुनकर भी इसमें शामिल हैं। भुजोड़ी के वांकर समुदाय के कुशल बुनकर गुजरात की समृद्ध, राजसी युग से चली आ रही वस्त्र परंपरा का गौरवपूर्ण उदाहरण हैं, जो आज भी आधुनिक युग में अपने प्राचीन कौशल की चमक बरकरार रखे हुए हैं। भुजोडी के कारीगर नानजी भीमजीभाई खारेत बताते हैं कि उन्हें और पूरे गाँव को प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनियों में वीवर्स सर्विस सेंटर विभाग से भरपूर सहयोग मिला है। भुजोडी के कारीगर फैबइन्डिया, जयपोर और गरवी गुजरात जैसी प्रतिष्ठित ब्रांड्स के साथ भी काम करते हैं।

भुजोडी विश्वभर में अपने हैंडलूम बुनाई के लिए जाना जाता है, जहाँ विश्व विख्यात भुजोडी शॉल, पारंपरिक ऊनी रजाइयाँ और कंबल तैयार किए जाते हैं। यहाँ के शिल्पकार जटिल बुनाई तकनीकों, पारंपरिक डिज़ाइनों और प्राकृतिक, समय-परखी रंगों का इस्तेमाल कर गुजरात के इतिहास की असल बनावट और सांस्कृतिक कथा को जीवित रखते हैं। यह सिर्फ कारीगरी नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण का महत्वपूर्ण प्रयास है, जिसे इन कारीगरों ने अपनी पीढ़ियों की मेहनत और समर्पण से जीवित रखा है।

अब इस विरासत के संरक्षण को एक बड़ा प्रोत्साहन मिलने जा रहा है। जनवरी 2026 के दूसरे सप्ताह में राजकोट में आयोजित होने वाले दूसरे वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेन्स (VGRC) और वाइब्रेंट गुजरात रीजनल एग्ज़िबिशन (VGRE) में भुजोडी के ये शिल्पी विशेष रूप से भाग लेने जा रहे हैं। यह सहभागिता आर्थिक और नीतिगत, दोनों स्तरों पर बड़े लाभ का आधार बनेगी। यह क्षेत्रीय सम्मेलन कच्छ और सौराष्ट्र क्षेत्र की आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति विशेषकर हैंडलूम और हैंडीक्राफ्ट क्षेत्र को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

इस कार्यक्रम में एक विशेष क्राफ्ट्स विलेज बनाया जाएगा जहाँ ये कारीगर अपने पुरस्कार-विजेता शिल्प का प्रदर्शन कर सकेंगे। साथ ही एक महत्वपूर्ण रिवर्स बायर–सेलर मीट (RBSM) भी आयोजित होगी जो इन MSMEs को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खरीदारों से सीधे जोड़ेगी और नए निर्यात बाज़ारों के द्वार खोलेगी।

इसके अलावा, सम्मेलन का उद्यमी मेला कारीगरों को तात्कालिक व्यावसायिक सहयोग, आर्थिक सहायता, वित्तीय लिंकेज और नीतिगत मार्गदर्शन प्रदान करेगा जिससे समुदाय की उद्यमशीलता क्षमता और भी मजबूत होगी। पर्यटन और संस्कृति को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान यह सुनिश्चित करेगा कि भुजोडी के ये पारंपरिक शिल्पकार अपनी कला-संरक्षण की मेहनत का स्थायी आर्थिक लाभ उठा सकें।

राजकोट का यह VGRC आयोजन भुजोडी के शिल्पियों के लिए अपने अनुभव, पुरस्कार और वैश्विक पहचान को दीर्घकालिक व्यापारिक सफलता में बदलने का एक ऐतिहासिक अवसर है। यह वह महत्वपूर्ण मोड़ है, जहाँ भुजोडी की कला विरासत को वैश्विक मंच पर निरंतर फलने–फूलने के लिए आवश्यक निवेश और पहचान मिलने की उम्मीद है।

भावनगर मंडल में री-ग्रांट ऑफ फैमिली पेंशन हेतु निवारण कैंप का सफल आयोजन

(जीएनएस)। री-ग्रांट ऑफ फैमिली पेंशन हेतु आवेदन करने वाले आवेदकों के मार्गदर्शन एवं त्वरित समाधान के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल द्वारा आज परिवारिक पेंशन निवारण कैंप का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आदरणीय मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। मंडल प्रशासन का प्रमुख उद्देश्य रेलवे कर्मचारियों, पेंशनरों एवं उनके आश्रितों को पारदर्शी, सुगम एवं समयबद्ध सेवाएँ उपलब्ध कराना है। इस कैंप में भावनगर मंडल के विभिन्न स्टेशनों से लगभग 200 से अधिक आवेदक सम्मिलित हुए। स्थापना एवं लेखा विभाग की संयुक्त टीम द्वारा सभी आवेदकों को रेलवे के निर्धारित मानदंडों के अनुसार आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत करने की प्रक्रिया, सामान्य त्रुटियों तथा अनावश्यक विलंब से बचने के उपायों पर विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस अवसर पर पेंशनर एसोसिएशन, भावनगर के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन की अध्यक्षता में दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर सहायक कार्मिक अधिकारी श्री वाई. राधेश्याम, सहायक कार्मिक अधिकारी श्री संतोष कुमार वर्मा एवं सहायक मंडल वित्त प्रबंधक श्री संजय सक्सेना उपस्थित रहे, जिन्होंने री-ग्रांट ऑफ फैमिली पेंशन से संबंधित मामलों में आवेदकों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। कैंप के दौरान निपटारा अनुभाग, लेखा विभाग एवं कल्याण अनुभाग द्वारा कई महत्वपूर्ण सेवाएँ उपलब्ध कराई गईं, जिनमें परिवारिक पेंशन मामलों का परीक्षण एवं निवारण, नामांकन एवं फैमिली डिक्लेरेशन का सत्यापन, आवश्यक दस्तावेजों की जाँच, पात्रता संबंधी जानकारी तथा पेंशन प्रक्रियाओं से जुड़ी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान प्रमुख रूप से शामिल रहा।

विभिन्न स्टेशनों से पधारे आवेदकों एवं उनके परिजनों ने इस पहल को अत्यंत उपयोगी, सहयोगपूर्ण एवं समय बचाने वाला बताया। भावनगर मंडल प्रशासन भविष्य में भी पेंशनरों एवं उनके आश्रितों के कल्याण हेतु ऐसे ही लाभकारी एवं जनोपयोगी कार्यक्रमों का आयोजन करता रहेगा, जिससे सभी लाभार्थियों को रेलवे द्वारा प्रदत्त सुविधाएँ सरल, सुगम एवं प्रभावी रूप से प्राप्त होती रहें।

इस अवसर पर आवेदकों की सुविधा एवं जानकारी हेतु एक हेल्पलाइन नंबर 9974387220 भी जारी किया गया है, जिस पर री-ग्रांट ऑफ फैमिली पेंशन से संबंधित जानकारी सोमवार से शुक्रवार सायं 15:00 से 18:00 बजे के बीच प्राप्त की जा सकती है। कार्यक्रम का संचालन मुख्य कर्मचारी एवं कल्याण निरीक्षक श्री शैलेश कुमार परमार द्वारा किया गया।

सप्ताह के दौरान सोना वायदा में 2411 रुपये और चांदी वायदा में 12151 रुपये का ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा में 93 रुपये की तेजी

(जीएनएस)। कॉटन, मेंथा तेल में नरमी का माहौलः इलायची में सुधारः कमोडिटी वायदाओं में 426235.42 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 2174156.04 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ साप्ताहिक टर्नओवरः सोना-चांदी के वायदाओं में 335588.19 करोड़ रुपये का हुआ साप्ताहिक कारोबारः बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 31010 पॉइंट के स्तर पर

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 28 नवंबर से 4 दिसंबर के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में 2600460.97 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 426235.42 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 2174156.04 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का दिसंबर वायदा 31010 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में सप्ताह का कुल प्रीमियम टर्नओवर 31032.05 करोड़ रुपये का हुआ।

आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 335588.19 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 128352 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 131400 रुपये के उच्च और 127891 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 127667 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 2411 रुपये या 1.89 फीसदी की तेजी के संग 130078 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-गिनी दिसंबर वायदा सप्ताह के अंत में 1985 रुपये या 1.94 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 104197 रुपये प्रति 8 ग्राम पर बंद हुआ। गोल्ड-पेटल दिसंबर वायदा 242 रुपये या 1.89 फीसदी की तेजी के संग 13048 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ। सोना-मिनी जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 126860 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 130170 रुपये के उच्च और 126860 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 2200 रुपये या 1.74 फीसदी की मजबूती के साथ सप्ताह के अंत में 128894 रुपये प्रति 10 ग्राम बंद हुआ। गोल्ड-टेन दिसंबर वायदा प्रति 10 ग्राम सप्ताह के आरंभ में 127105 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 130350 रुपये के उच्च और 127105 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 126904 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 2288 रुपये या 1.8 फीसदी की बढ़त के साथ 129192 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सप्ताह के आरंभ में 167190 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 184743 रुपये और नीचे में 166980 रुपये पर पहुंचकर, 165987 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 12151 रुपये या 7.32 फीसदी बढ़कर 178138 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा सप्ताह के अंत में चांदी-मिनी फरवरी वायदा 12266 रुपये या 7.36 फीसदी की तेजी के संग 178937 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 12328 रुपये या 7.4 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट सप्ताह के अंत में 178943 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ।

मेटल वर्ग में 25221.11 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा दिसंबर वायदा सप्ताह के अंत में 52.9 रुपये या 5.18 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 1073.6 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। जबकि जस्ता दिसंबर वायदा 9.15 रुपये या 3.06 फीसदी की मजबूती के साथ सप्ताह के अंत में 308.25 रुपये प्रति किलो बंद हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम दिसंबर वायदा 7.8 रुपये या 2.88 फीसदी बढ़कर 278.25 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ। जबकि सीसा दिसंबर वायदा 1.3 रुपये या 0.72 फीसदी बढ़कर सप्ताह के अंत में 183.05 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 65410.44 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल दिसंबर वायदा सप्ताह के आरंभ में 5281 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 5398 रुपये और नीचे में 5258 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 93 रुपये या 1.76 फीसदी की तेजी के संग 5383 रुपये प्रति बैरल के भाव पर बंद हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी दिसंबर वायदा 92 रुपये या 1.74 फीसदी की बढ़त के साथ 5381 रुपये प्रति बैरल के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ। इनके अलावा नैचुरल गैस दिसंबर वायदा सप्ताह के आरंभ में 415.5 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 455.6 रुपये और नीचे में 410.1 रुपये पर पहुंचकर, 413.1 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 34.3 रुपये या 8.3 फीसदी की तेजी के संग 447.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर बंद हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी दिसंबर वायदा 34.5 रुपये या 8.35 फीसदी की मजबूती के साथ 447.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बंद हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल दिसंबर वायदा सप्ताह के आरंभ में 909 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 6.3 रुपये या 0.69 फीसदी औंधकर 903.2 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। कॉटन दिसंबर वायदा सप्ताह के अंत में प्रति गांठ 20 रुपये या 0.08 फीसदी घटकर 25130 रुपये पर बंद हुआ। इलायची दिसंबर वायदा सप्ताह के आरंभ में 2685 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में सप्ताह के अंत में यह वायदा 29 रुपये या 1.09 फीसदी की बढ़त के साथ 2700 रुपये पर बंद हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 156847.73 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 178740.46 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 20087.80 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 1579.47 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 291.50 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 3258.11 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 6847.33 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 58455.07 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 10.54 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 1.00 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सप्ताह के अंत में सोना के वायदाओं में 13025 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 44282 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 9121 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 150163 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 14072 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 14599 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 33063 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 74968 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 13203 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 24555 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स दिसंबर वायदा सप्ताह के आरंभ में 30197 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 31551 के उच्च और 30010 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 997 पॉइंट बढ़कर 31010 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।

'गेट्स फाउंडेशन' ने गुजरात बायोटेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी की रिसर्च टीम को महिलाओं के भारी मासिक धर्म रक्तस्राव से संबंधित रिसर्च के लिए 1 करोड़ रुपए से अधिक की सहायता दी

▸▸ यह रिसर्च महिलाओं को पीरियड्स के दौरान होने वाली तकलीफों को दूर करने में सहायक होगी

▸▸ कम सुविधा वाले इलाकों में भारी मासिक धर्म रक्तस्राव (एचएमबी) की वजह का पता लगाने के लिए होगा आधुनिक डायग्नोस्टिक्स और एआई टेक्नोलॉजी का उपयोग

▸▸ एचएमबी की समस्या के निवारण और इस विषय में जागरूकता फैलाने के लिए महिलाओं को करेगा आमंत्रित जीबीयू

(जीएनएस)। गांधीनगर : गेट्स फाउंडेशन राज्य सरकार की ओर से संचालित गुजरात बायोटेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी (जीबीयू) की रिसर्च टीम को महिलाओं को पीरियड्स यानी माहवारी के दौरान होने वाले भारी रक्तस्राव पर रिसर्च करने के लिए करीब 1.3 करोड़ रुपए की सहायता देगा। गेट्स फाउंडेशन की फंडिंग के अंतर्गत जीबीयू की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. रोहिणी नायर के नेतृत्व में शोधकर्ताओं की एक टीम 'हैवी मेंस्ट्रुअल ब्लीडिंग-एचएमबी' यानी महिलाओं के पीरियड्स के दौरान होने वाले भारी रक्तस्राव के लिए यानी आरएनए-आधारित यानी राईबोन्यूक्लिक एसिड पर आधारित डायग्नोस्टिक एवं उपचार के लिए संसाधन विकसित करने के लिए कार्य करेगी। ये संसाधन सस्ते, स्केलेबल यानी विस्तार करने में सक्षम और कम आक्रामक होंगे। विशेषकर, दूरदराज के इलाकों में महिलाओं के लिए जल्दी निदान, व्यक्तिगत उपचार और मेंस्ट्रुअल हेल्थ मैनेजमेंट में सुधार लाने के उद्देश्य के साथ इस प्रोजेक्ट को 'गेट्स फाउंडेशन ग्रैंड चैलेंजेस सपोर्ट' के तहत स्वीकृत किया गया है। गेट्स फाउंडेशन ने इसके लिए लगभग 1.3 करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता मंजूर की है।

डॉ. रोहिणी नायर ने इस विषय में बताया कि गेट्स फाउंडेशन ने फरवरी, 2025 में 'ग्रैंड चैलेंजेस' फंडिंग कॉल शुरू किया था, जिसमें महिलाओं के स्वास्थ्य से संबंधित गंभीर, लेकिन अक्सर उपेक्षा का शिकार रहने वाली समस्या हैवी मेंस्ट्रुअल ब्लीडिंग के निवारण के लिए अभिनव दृष्टिकोण आमंत्रित किए गए थे। फाउंडेशन मूल्यांकन के लिए दो चरणों की प्रक्रिया का पालन करता है, जिसकी शुरुआत कंसेप्ट नोट या लेटर ऑफ इंक्वायरी (एलओआई) से होती है। इसके बाद शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों से संपूर्ण प्रपोजल मंगाया जाता है, ताकि वैश्विक स्वास्थ्य प्राथमिकताओं और वैज्ञानिक सावधानी या सटीकता बनी रहे। भारी मासिक धर्म रक्तस्राव की समस्या के निवारण और इस संबंध में जागरूकता फैलाने के लिए जीबीयू की ओर से महिलाओं को भी आमंत्रित किया जाएगा, ताकि यह अन्य महिलाओं के लिए मददगार साबित हो सके। यह रिसर्च-स्टडी अहमदाबाद की इंस्टीट्यूट ऑफ किडनी डिजीज एंड रिसर्च सेंटर (आईकेडीआरसी) के ऑब्स्टेट्रिक्स (प्रसूति रोग) और गायनेकोलॉजी (स्त्री रोग) विभाग की डीन एवं हेड डॉ. रोहिना अग्रवाल के सहयोग से की जाएगी।

रिसर्च के अंतर्गत डॉ. अग्रवाल मरीजों की पहचान और चिकित्सा मूल्यांकन में मुख्य भूमिका निभाएंगी, जबकि डॉ. नायर की लेबोरेटरी महिलाओं के स्वास्थ्य रिसर्च पर ध्यान केंद्रित करेंगी। वे, विशेषकर गर्भ धारण करने में बार-बार होने वाली असफलता (RIF - Repeated Implantation Failure) और एंडोमेट्रिओसिस पर एचएमबी के लिए आरएनए-आधारित किफायती और न्यूनतम आक्रामक संसाधन विकसित करने पर सक्रिय रूप से कार्य करेंगी।

डॉ. नायर ने आगे कहा कि आज भारी माहवारी रक्तस्राव (एचएमबी) से दुनिया भर की लाखों महिलाएं प्रभावित हैं। इसके चलते एनीमिया, कार्यक्षमता में कमी, लंबे समय तक थकान महसूस करना और जीवन की गुणवत्ता कमजोर पड़ने जैसी समस्याएं खड़ी होती हैं। इसका प्रभाव उन इलाकों में अधिक गंभीर है, जहां समय पर डायग्नोसिस और प्रभावी उपचार की कम सुविधाएं हैं। यह प्रोजेक्ट हार्मोनल इन्ट्रा-यूरेटाइन डिवाइस जैसे उपचार की स्वीकार्यता और पहुंच बढ़ाने के रास्तों की भी खोज करेगा। एचएमबी के व्यापक प्रसार के बावजूद, अभी इसके पीछे के जैविक कारणों के बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं है। यह केवल वृद्ध महिलाओं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि युवा पीढ़ी में भी देखने को मिलता है। हालांकि, हमारे सामाजिक परिवेश के कारण महिलाएं खुलकर बात नहीं कर पातीं और आम तौर पर दर्दनिवारण दवाइयां लेकर अपना काम चलाती हैं।

इस समस्या के बारे में अधिक जानकारी देते हुए डॉ. नायर ने कहा कि एबनॉर्मल यूटेराइन ब्लीडिंग यानी असामान्य गर्भाशय रक्तस्राव, जिसका एचएमबी एक विषय है, वह विभिन्न कारकों के कारण होता है। जिनमें स्ट्रक्चरल एबनॉर्मलिटीज जैसे कि पोलिप्स, एडिनोमायोसिस, फाइब्रोइड्स और मैलिग्नेंसी-कैंसर शामिल हैं। वहीं, नॉन-स्ट्रक्चरल कारकों में ब्लीडिंग डिसऑर्डर यानी रक्तस्राव विकार, ओव्यूलेटरी और एंडोमेट्रियल डिसफंक्शन का सामवेश होता है।

इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य सिंगल-सेल आरएन सिक्वेंसिंग का उपयोग करके एचएमबी के सेलुलर और मॉलिक्युलर कारकों को मैप करना है, जिससे कि एंडोमेट्रियल माइक्रोएन्वायर्नमेंट का व्यापक डेटा संग्रह तैयार किया जा सके। उम्मीद है कि इस कार्य से मिलने वाली जानकारी असामान्य मासिक रक्तस्राव से जुड़े मुख्य पाथ-वे यानी मार्ग और बायोमार्कर्स की पहचान करेगी।

गुजरात बायोटेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी के डीन रिसर्च प्रो. सुधीर प्रताप सिंह ने कहा कि जीबीयू इस उपलब्धि को वैश्विक महिला स्वास्थ्य रिसर्च में भारत के योगदान के रूप में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानता है और प्रभावशाली एवं विज्ञान-आधारित रिसर्च को प्रोत्साहन देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करता है।

एचएमबी पर रिसर्च प्रोजेक्ट का मुख्य फोकस एरिया एचएमबी यानी भारी मासिक रक्तस्राव की फंडामेंटल बायोलॉजी की समझ को आगे बढ़ाना और कम सुविधाओं वाले इलाकों में महिलाओं में इस रोग के फैलाव, प्रभाव और स्त्री रोग स्वास्थ्य तथा जीवन की गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करना है।

इसके अलावा, ध्यान केंद्रित करने के अन्य क्षेत्रों में, एचएमबी की जांच के लिए संशोधित पद्धतियां विकसित करना और उन्हें प्रमाणित करना तथा स्टैंडर्डाइज्ड रिसर्च प्रोटोकॉल स्थापित करना और कम सुविधाओं वाले इलाकों में एचएमबी के कारणों की पहचान करने के लिए अत्याधुनिक डायग्नोस्टिक्स तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) टेक्नोलॉजी का उपयोग करने के साथ-साथ उपचार की प्रभावशीलता, स्वीकार्यता और उपचार तक पहुंच बढ़ाने के रास्तों का मूल्यांकन करना शामिल हैं।

पश्चिम रेलवे चलायेगी साबरमती से दिल्ली और दिल्ली सराय रोहिल्ला के बीच स्पेशल ट्रेनें

(जीएनएस)। यात्रियों की आवाजाही को सुगम बनाए रखने के लिए पश्चिम रेलवे पूर्णतः प्रतिबद्ध है। यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा ट्रेन ऑन डिमांड (TOD) के अंतर्गत साबरमती-दिल्ली जंक्शन और साबरमती-दिल्ली सराय रोहिल्ला के बीच विशेष किराये पर स्पेशल ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया गया है। ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः

1. ट्रेन संख्या 09497/09498 साबरमती-दिल्ली जं. सुपरफास्ट स्पेशल (4 फेरे)

ट्रेन संख्या 09497 साबरमती-दिल्ली स्पेशल 7 और 9 दिसंबर 2025 को साबरमती से 22.55 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 15.15 बजे दिल्ली पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09498 दिल्ली–साबरमती स्पेशल 8 और 10 दिसंबर 2025 को दिल्ली जं. से 21.00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 12.20 बजे साबरमती पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन महेसाणा, पालनपुर, आबूरोड, मारवाड़ जं.,अजमेर, जयपुर, अलवर, रेवाड़ी, गुडगाँव एवं दिल्ली केंट स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में एसी 3-टियर श्रेणी के कोच रहेंगे।

2. ट्रेन संख्या 04061/4062 साबरमती-दिल्ली सराय रोहिल्ला-साबरमती स्पेशल (2 फेरे)

ट्रेन संख्या 04061 साबरमती-दिल्ली सराय रोहिल्ला स्पेशल 07 दिसंबर 2025 को साबरमती से प्रातः 05.30 बजे प्रस्थान करेगी तथा उसी दिन रात्री 23.00 बजे दिल्ली सराय रोहिल्ला पहुंचेगी। इसी तरह से ट्रेन संख्या 04062 दिल्ली सराय रोहिल्ला-साबरमती स्पेशल 06 दिसंबर 2025 को दिल्ली सराय रोहिल्ला से 08.10 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 07 दिसंबर 2025 को 00.30 बजे साबरमती पहुंचेगी।

यह ट्रेन मार्ग में पालनपुर, आबूरोड, फालना, मारवाड़, ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, अलवर, रेवाड़ी, गुडगाँव एवं दिल्ली केंट स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन एसी 2 टियर एवं एसी 3-टियर श्रेणी के आरक्षित कोच रहेंगे।

ट्रेन संख्या 09497 एवं 04061 की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू है। ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

आरपीएफ गांधीग्राम का सराहनीय कदमः ऑपरेशन अमानत के तहत यात्री का पर्स सकुशल लौटाया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल अंतर्गत गांधीग्राम रेलवे स्टेशन पर ऑपरेशन अमानत के तहत ईमानदारी और तत्परता का एक सराहनीय उदाहरण सामने आया है। दिनांक 06.12.2025 (शनिवार) को गांधीग्राम के प्लेटफॉर्म संख्या 02 से सवारी गाड़ी संख्या 19204 (वेरावल–बांद्रा टर्मिनस) के रवाना होने के बाद ऑन ड्यूटी हेड कांस्टेबल श्री सुरेशभाई वाधेला को प्लेटफॉर्म पर एक महिला का पर्स पड़ा हुआ मिला। तत्पश्चात उन्होंने प्वाइंट्समैन को साथ लेकर पर्स को स्टेशन कार्यालय में लाया और ऑन ड्यूटी स्टेशन मास्टर तथा रेल सफाई कर्मचारियों की उपस्थिति में पर्स की जांच की गई।

पर्स में नकद 1880/-, एक पैन कार्ड, आधार कार्ड, मोबाइल चार्जर सहित अन्य आवश्यक सामग्री पाई गई। उक्त पर्स को सुरक्षित रूप से कार्यालय में रखवा दिया गया। कुछ समय पश्चात एक व्यक्ति श्री जितेन्द्र सेवेरा, निवासी अहमदाबाद, स्टेशन पर उपस्थित हुए और पर्स उनकी माता का होना बताया, जो उसी दिन ट्रेन संख्या 19204 के वातानुकूलित कोच बी-6 में यात्रा कर रही थीं। वैध जांच एवं सत्यापन के पश्चात पर्स तथा उसमें रखी समस्त सामग्री सही हालत में यात्री के पुत्र को लौटा दी गई। पर्स मिलने पर यात्री एवं उनके पुत्र द्वारा आरपीएफ गांधीग्राम का हृदय से आभार व्यक्त किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि हेड कांस्टेबल श्री सुरेशभाई वाधेला द्वारा ऑपरेशन अमानत के अंतर्गत किया गया यह कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है और रेलवे सुरक्षा बल की ईमानदारी, तत्परता तथा सेवा भावना को दर्शाता है।

करमसद से प्रारंभ हुई 'सरदार@150' राष्ट्रीय एकता पदयात्रा 11 दिनों के परिभ्रमण के बाद एकता नगर में समाप्त हुई

एक और अखंड भारत के निर्माण में सरदार साहब का योगदान पीढ़ियों तक अमर रहेगा : उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन

- उपराष्ट्रपति ने युवाओं से 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत, सशक्त भारत' की भावना के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देने का आह्वान किया
- बारडोली सत्याग्रह ने सरदार साहब को देश भर में मजबूत और कद्दावर जननेता के रूप में स्थापित किया : राज्यपाल आचार्य देवव्रत
- प्रधानमंत्री ने जम्मू और कश्मीर में अनुच्छेद 370 को निरस्त कर देश को एक और अखंड करने के संकल्प को साकार किया है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
- 'सरदार@150' राष्ट्रीय एकता पदयात्रा सच्चे अर्थ में 'विचार की यात्रा' बनी : केंद्रीय खेल एवं युवा मामले मंत्री डॉ. मनसुखभाई मांडविया
- उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में करमसद से एकता नगर तक चले यूनिटी मार्च का समापन समारोह आयोजित
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, राज्यपाल आचार्य देवव्रत, केंद्रीय मंत्री श्री मनसुखभाई मांडविया सहित मंत्रियों की विशेष उपस्थिति

उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन :-

- एकता पदयात्रा भारत की अमर आत्मा का उत्सव, जिसमें एकता, कर्तव्य और राष्ट्र निर्माण की भावना का समन्वय हुआ
- देश की 65 फीसदी आबादी युवा : 'यूथ पावर' देश की ऊर्जा, प्रतिभा और आकांक्षाओं का अद्वितीय स्रोत
- एकता पदयात्रा देश के जन और मन को जोड़ने का माध्यम बनी

(जीएनएस)। गांधीनगर : लौह पुरुष, देश के प्रथम गृह मंत्री, भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में उन्हें स्मरणांजलि देने के लिए करमसद से शुरू हुई 'सरदार@150' राष्ट्रीय एकता पदयात्रा 11 दिनों के परिभ्रमण के बाद शनिवार को एकता नगर स्थित सरदार पटेल की दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' परिसर में समाप्त हुई। एकता पदयात्रा के समापन समारोह में उपस्थित उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने इस पदयात्रा को भारत की अमर आत्मा का उत्सव करार दिया। उन्होंने गर्व से कहा कि एकता पदयात्रा देश के जन एवं मन को जोड़ने का माध्यम बनी है, जिसमें एकता, कर्तव्य और राष्ट्र निर्माण की भावना का समन्वय देखने को मिला।

उपराष्ट्रपति ने आगे कहा कि सरदार पटेल हमारे श्रेष्ठ राष्ट्रीय नायक थे, जिन्होंने कुशल नेतृत्व प्रदान कर 560 से अधिक रियासतों को एकीकृत किया। एक और अखंड भारत के निर्माण में सरदार साहब का योगदान पीढ़ियों तक अमर रहेगा। उन्होंने गौरव से कहा कि देश भर में 1300 से अधिक पदयात्राओं में 14 लाख से अधिक युवाओं की भागीदारी यह सिद्ध करती है कि सरदार पटेल द्वारा प्रज्वलित की गई एकता की ज्योति आज भी जल रही है। उन्होंने यह भी कहा कि सरदार साहब से जुड़ी इस पदयात्रा ने पूरे देश में एकता, भाईचारे और एक भारत, श्रेष्ठ भारत, आत्मनिर्भर भारत का संदेश फैलाया है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि सरदार साहब ने अपने सादगीभरे व्यक्तित्व से दुनिया को संदेश दिया था कि "एग्रीकल्चर इज अवर कल्चर" यानी कृषि ही हमारी संस्कृति का मूल है, और यही हमारी पहचान है। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोकर भारत को एक, अखंड और मजबूत बनाया।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि गुजरात दुनिया को अहिंसा और सत्य का मार्ग बताने वाले महात्मा गांधी जी, देश को एकता के सूत्र में बांधने वाले सरदार वल्लभभाई पटेल और विकास को राष्ट्रीय आंदोलन बनाने वाले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की जन्मभूमि है। देश के किसी भी कोने में 'केम छो?' कहने पर, प्रत्युत्तर में 'मजा मां!' सुनने को मिलता है, यह भावना गुजरात की प्रगतिशील विचारधारा और प्रधानमंत्री के लोकप्रिय नेतृत्व का प्रतिबिंब है।

श्री राधाकृष्णन ने कहा कि भारत ने पिछले 10 वर्षों में आर्थिक, सामाजिक, सैन्य और विदेश नीति तथा रणनीति जैसे अनेक क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। नारी शक्ति वंदन कानून ने स्त्री सशक्तिकरण से आगे बढ़कर वुमन-लेड डेवलपमेंट यानी महिलाओं के नेतृत्व में विकास का युग शुरू किया है। केंद्र सरकार ने हाल ही में चार नई श्रम संहिताएं (लेबर कोड्स) लागू की हैं, जो न्यायपूर्ण, सर्वसमावेशी और प्रगतिशील भारत के निर्माण के संकल्प को मजबूत आधार देती हैं। ये श्रम संहिताएं देश के श्रमिक वर्ग के लिए समानता और सम्मान का पथ प्रशस्त करेंगी।

उन्होंने कहा कि सरदार पटेल जी का मजबूत, सक्षम और आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के गतिशील नेतृत्व में तेजी से साकार हो रहा है। सरदार साहब के आदर्श विचारों की विरासत आज आत्मनिर्भर भारत और 'विकसित भारत@2047' के संकल्प में नजर आती है।

उपराष्ट्रपति ने युवाओं को ड्रग्स के शिकंजे में कभी न फंसने की सीख देते हुए कहा कि युवा शक्ति देश का भविष्य है। देश की 65 फीसदी आबादी युवा है और 'यूथ पावर' देश की ऊर्जा, प्रतिभा और आकांक्षाओं का अद्वितीय स्रोत है, ऐसे में उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे खेल, सामाजिक दायित्व और संस्कारपूर्ण व्यवहार के माध्यम से बदलते समय में अपनी क्षमताओं को विकास की दिशा में मोड़ें।

उपराष्ट्रपति ने युवाओं को 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत, सशक्त भारत' की भावना के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि बारडोली सत्याग्रह ने सरदार साहब को देश भर में मजबूत और कद्दावर जननेता के रूप में स्थापित किया। वल्लभभाई पटेल ने अंग्रेजों की अन्यायपूर्ण कर वृद्धि (लगान वृद्धि) के खिलाफ आंदोलन का आगे बढ़कर नेतृत्व किया। उस समय वे एक सफल वकील थे और आरामदायक जीवन जी सकते थे, लेकिन उन्होंने देश सेवा के लिए अपनी वकालत छोड़ दी।

उन्होंने कहा कि सरदार पटेल जी ने बारडोली के गांव-गांव में घूमकर किसानों को इकट्ठा किया, उनमें आत्मविश्वास जगाया और उन्हें एकता के सूत्र में बांधने का भगीरथ कार्य किया था। ऐसे मुश्किल वक्त में सरदार पटेल ने सफल सत्याग्रह का सफल नेतृत्व किया। किसानों की इस जीत और उनके नेतृत्व के कारण ही वल्लभभाई पटेल को 'सरदार' का सम्मानित नाम मिला।

राज्यपाल ने कहा कि एकता नगर में सरदार साहब की दुनिया की सबसे विराट प्रतिमा का निर्माण करवाकर उन्हें देश की एकता और अखंडता का प्रतीक बनाया है। देश भर में आयोजित पदयात्राएं सरदार साहब के जीवन आदर्शों और सत्कार्यों से नई ऊर्जा प्राप्त करेंगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि देश की एकता और अखंडता के शिल्पी लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के समारोह का वर्ष पूरे देश में राष्ट्र गौरव को उजागर करने वाला एक ऐतिहासिक वर्ष बन गया है। यह वर्ष राष्ट्रगीत वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ, भगवान बिरसा मुंडा जी की 150वीं जयंती तथा सरदार साहब की विचारधारा के वैश्विक प्रचार-प्रसार का प्रेरणास्रोत बन रहा है।

उन्होंने देश की एकता के शिल्पी सरदार साहब को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि भारत एक सक्षम राष्ट्र के रूप में खड़ा है, यह सरदार पटेल की राजनीति, हिम्मत और मजबूत इच्छाशक्ति का नतीजा है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि डॉ. बाबासाहब अंबेडकर द्वारा दिया गया संविधान हमारे राष्ट्र के बंधुत्व के संकल्प का प्रतीक है। 26 नवंबर को संविधान अंगीकार दिवस से शुरू हुए इस राष्ट्रीय यूनिटी मार्च का डॉ. बाबासाहब की पुण्य तिथि-परिनिर्वाण दिवस पर पूर्ण होना अपने आप में एक अनोखा और प्रेरणादायी संदेश देता है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने सरदार पटेल और श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नारे 'एक देश, एक विधान, एक प्रधान और एक निशान' को स्थापित करने के संकल्प को जम्मू और कश्मीर में अनुच्छेद 370 को निरस्त कर साकार किया है। प्रधानमंत्री ने सरदार पटेल के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए गुजरात के केवड़िया में दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का निर्माण कराया है।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि युवा शक्ति विकसित भारत के निर्माण की मजबूत नींव है। इस यूनिटी मार्च में जुड़े युवाओं में अदम्य ऊर्जा और प्रेरणा देखने को मिली है। बिना थके, लगातार चलते रहने वाले युवाओं की इस यात्रा को 'सकारात्मक कदम' भी कहा जा सकता है। यात्रा के दौरान सरदार वंदना और राष्ट्रभक्ति के रंगों के साथ-साथ स्वच्छता, एक पेड़ मां के नाम जैसे प्रधानमंत्री नरेंद्रभाई मोदी द्वारा दिए गए आयामों को युवा शक्ति ने हृदय से चरितार्थ किया है। एकता का, समरसता का और सामूहिक विकास का भाव हर क्षण दिखाई दिया है।

समापन अवसर पर मुख्यमंत्री ने आह्वान किया कि हम सभी को सरदार साहब के 'राष्ट्र प्रथम' के सिद्धांत को हृदय में रखकर देश के विकास के पथ पर अडिग रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि 'विकसित भारत@2047' के राष्ट्रीय संकल्प को साकार करने के लिए प्रतिबद्धता, कार्यशीलता और एकता की भावना के साथ आगे बढ़ना मौजूदा दौर की मांग है।

केंद्रीय खेल एवं युवा मामले मंत्री डॉ. मनसुखभाई मांडविया ने कहा कि यह पदयात्रा सरदार साहब के पैतृक गांव करमसद से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी (एकता नगर) तक 150 किलोमीटर की इस पदयात्रा के अंतिम चरण में उन्होंने स्वयं चार दिनों तक भाग लिया। उन्होंने कहा कि 150 स्थायी पदयात्रियों के साथ देश भर से असंख्य युवा और महिलाएं तथा गुजरात के कोने-कोने से हजारों युवा अपनी क्षमता के अनुसार एक, दो या तीन दिनों के लिए इस यात्रा में शामिल हुए, जिसके कारण यह पदयात्रा सच्चे अर्थ में 'विचार की यात्रा' बन गई है।

श्री मनसुखभाई ने यात्रा के दौरान जनता के उत्साहपूर्ण समर्थन का उल्लेख करते हुए कहा कि पदयात्रा जहां से भी गुजरी, वहां जनता ने जोश-खरोश के साथ स्वागत किया। बड़ी संख्या में लोग पदयात्रा में स्वतःस्फूर्त शामिल हुए हैं। किसानों ने भी इस यात्रा में अनोखा योगदान दिया है। उन्होंने अपने खेतों में पके केले और अमरूद आदि पदयात्रियों को खिलाकर उनका स्वागत किया। इस पदयात्रा के दौरान किसानों ने रास्ते में प्राकृतिक खेती का प्रदर्शन कर 'आत्मनिर्भर भारत' का संदेश फैलाया। यह पदयात्रा राष्ट्र को एकता यात्रा के रूप में संदेश दे रही है और प्रधानमंत्री के एक भारत, श्रेष्ठ भारत के स्वप्न को साकार कर रही है।

इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों ने स्वदेशी अपनाकर 'आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण की शपथ ली।

उल्लेखनीय है कि 'सरदार@150' राष्ट्रीय एकता पदयात्रा 26 नवंबर को सरदार साहब के जन्म स्थान करमसद से शुरू हुई थी। 11 दिनों तक चली यह यात्रा आणंद के अलावा वडोदरा, नर्मदा जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में परिभ्रमण करने के बाद 6 दिसंबर को नर्मदा जिले के एकता नगर स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी पहुंची। राष्ट्रीय यूनिटी मार्च में जुड़े ऊर्जावान युवाओं, महानुभावों, जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संस्था के लोगों, स्वयंसेवकों और स्थानीय नागरिकों ने आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत के निर्माण में योगदान देने के लिए जन-जन तक एकता का संदेश पहुंचाया।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीमती रक्षा खडसे, केंद्रीय राज्य मंत्री श्री तोखन साहू, स्वराज आश्रम-बारडोली की ट्रस्टी निरंजनाबेन कलार्थी, सांसद श्री मनसुखभाई वसावा और जशुभाई राठवा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री भीमसिंहभाई तड़वी, विधायक डॉ. दर्शनाबेन देशमुख सहित जिला प्रशासन के अधिकारी, पदयात्री और बड़ी संख्या में सरदार प्रेमी नागरिक उपस्थित रहे।

राबड़ी देवी की ट्रांसफर याचिका पर अदालत में गहमागहमी, अगली सुनवाई 9 दिसंबर को

(जीएनएस)। नई दिल्ली। राजधानी स्थित राउज एवेन्यू कोर्ट में शनिवार का दिन कानूनी बहसों, आरोप-प्रत्यारोप और न्यायिक प्रक्रिया पर उठते गंभीर सवालों से भरा रहा। बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी द्वारा दायर वह याचिका, जिसमें उन्होंने अपने और परिवार से जुड़े मामलों को मौजूदा जज से हटाकर किसी अन्य जज को सौंपने की मांग की है, अदालत में पूरे दिन चर्चा का केंद्र बनी रही। यह याचिका सिर्फ एक औपचारिक कदम नहीं थी, बल्कि इसके जरिए राबड़ी देवी ने न्यायिक निष्पक्षता और सुनवाई की पारदर्शिता पर गहरे सवाल खड़े कर दिए हैं। याचिका पर सुनवाई के दौरान अदालत में कई बार माहौल गंभीर हुआ। ट्रांसफर याचिका पर बहस को ध्यान में रखते हुए प्रिंसिपल एंड डिस्ट्रिक्ट जज दिनेश भट्ट ने आदेश दिया कि इस मामले पर सुनवाई अब 9 दिसंबर को भी जारी रहेगी। राबड़ी देवी की ओर से पेश अधिवक्ता की दलीलें अदालत में लंबे समय तक गूंजती रहीं, जिनमें यह आरोप शामिल था कि मौजूदा जज विशाल गोगने "न्यायिक प्रक्रिया का पालन नहीं कर रहे" और ऐसा प्रतीत होता है कि "किसी भी कीमत पर वर्ष 2026 में फैसला सुना देने का दबाव" उनके ऊपर है। वकील ने यह भी कहा कि कई सुनवाईयों के दौरान जज

का व्यवहार उन्हें पक्षपातपूर्ण लगा और ऐसे माहौल में निष्पक्ष ट्रायल की उम्मीद कमजोर पड़ती है।

इन आरोपों के जवाब में अदालत ने गंभीरता दिखाई और सभी पक्षों की दलीलें विस्तार से सुनीं। हालांकि अदालत ने अभी तक कोई अंतिम राय नहीं दी है, लेकिन यह साफ हो गया कि मामला सामान्य प्रक्रिया से कहीं अधिक संवेदनशील हो चुका है।

सुनवाई के दौरान बार-बार यह बात उठी कि जिन मामलों पर ट्रायल चल रहा है, वे सिर्फ कानूनी महत्व के नहीं हैं बल्कि राजनीतिक रूप से भी अत्यंत अहम हैं। राबड़ी देवी ने चार मामलों को दूसरे जज के हवाले करने की मांग की है, जिनमें रेलवे टेंडर घोटाला और लैंड फॉर जॉब घोटाला सबसे प्रमुख हैं। इन मामलों में वर्षों से जांच चल रही है और सीबीआई तथा ईडी दोनों एजेंसियां अदालत में चार्जशीट के साथ कई दस्तावेज, बयान और तकनीकी सबूत दाखिल कर चुकी हैं।

अक्टूबर महीने में जज विशाल गोगने ने लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव के खिलाफ रेलवे टेंडर घोटाले में आरोप तय किए थे, जिसे लेकर राजनीतिक हलकों में खासा विवाद भी हुआ था। आरोप तय होने के बाद से ही राबड़ी देवी पक्ष यह दावा करता आ रहा है कि सुनवाई का माहौल उन्हें न्यायिक रूप से सहज नहीं महसूस कराता।

ट्रायल के दौरान वर्षों से कई आदेश जारी होते रहे हैं—कभी जमानत, कभी दस्तावेजों की जांच, तो कभी अगली तारीख। लेकिन इस बार ट्रांसफर याचिका ने पूरे मामले को एक नए मोड़ पर ला खड़ा किया है, क्योंकि अब यह सवाल सिर्फ आरोपों और सबूतों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि न्यायाधीश की भूमिका और अदालत की निष्पक्षता पर भी केंद्रित हो गया है।

9 दिसंबर की सुनवाई अब इस पूरे विवाद में निर्णायक साबित होगी। अदालत को यह तय करना होगा कि क्या वास्तव में ऐसे हालात बन चुके हैं, जिनमें मामले को दूसरे जज को सौंपना जरूरी है, या फिर मौजूदा जज के पास ही ट्रायल जारी रहेगा। अगर अदालत ट्रांसफर की अनुमति देती है, तो यह कदम न केवल राबड़ी देवी के लिए राहत साबित होगा, बल्कि न्यायपालिका में निष्पक्षता की उस पारदर्शिता को भी मजबूत करेगा जिसका उल्लेख याचिका में किया गया है। वहीं अगर अदालत ट्रांसफर की मांग खारिज करती है, तो मौजूदा जज की निगरानी में ही इन संवेदनशील मामलों की सुनवाई आगे बढ़ेगी और राजनीतिक हलकों में इसकी प्रतिक्रिया नई बहसें जन्म दे सकती है। फिलहाल सारा ध्यान 9 दिसंबर पर टिका है, जब अदालत इस महत्वपूर्ण ट्रांसफर याचिका पर अपनी अगली सुनवाई में भविष्य की दिशा तय करेगी।

राजस्थान हाईकोर्ट ने पुलिस महकमे को फटकार लगाते हुए कहा-नौकरी से बर्खास्तगी किसी भी कर्मचारी की 'आर्थिक मौत', बिना ठोस सबूत जीवन भर का संकट नहीं थोपा जा सकता

(जीएनएस)। जोधपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में न सिर्फ एक बर्खास्त कांस्टेबल को सेवा में बहाल किया, बल्कि पुलिस विभाग की कार्यप्रणाली पर भी सख्त टिप्पणी की है। कोर्ट ने साफ शब्दों में कहा कि किसी व्यक्ति को नौकरी से निकाल देना उसके पूरे परिवार पर आर्थिक मृत्यु जैसा प्रहार होता है। इसलिए ऐसा फैसला केवल ठोस, निष्पक्ष और निर्विवाद सबूतों की मौजूदगी में ही लिया जाना चाहिए, न कि अनुमान या दबाव के आधार पर। यह फैसला नागौर के मेड़ता सिटी के निवासी और वर्ष 2008 में भर्ती हुए कांस्टेबल शंकरराम से जुड़े मामले में सुनाया गया। शंकरराम पर आरोप था कि 2009-10 में प्रोबेशन के दौरान उन्होंने ट्रेनिंग सेंटर के कैंटीन ठेकेदार के बेटे को नौकरी दिलाने का झांसा देकर पैसे लिए। विभागीय जांच के बाद उन्हें 15 मई 2018 को बर्खास्त कर दिया गया था। कानूनी लड़ाई कई वर्षों तक चली और अंततः मामला राजस्थान हाईकोर्ट पहुंचा, जहां जस्टिस फरजंद अली ने पूरे रिकॉर्ड का विस्तार से परीक्षण किया। सुनवाई के दौरान यह

महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया कि इस मामले के प्रमुख गवाह अपने बयान बदल चुके थे और विभागीय जांच में वे ठोस प्रमाण मौजूद नहीं थे, जिनके आधार पर किसी कर्मचारी की सेवा समाप्त की जा सके। कोर्ट ने सवाल उठाया कि जब जांच अधूरी, गवाह पलट चुके और साक्ष्य कमजोर थे, तब बर्खास्तगी जैसे कठोर दंड को किस आधार पर उचित माना गया। जस्टिस अली ने टिप्पणी की कि IG ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया और विभागीय प्रक्रिया न्यायिक मानकों पर खरी नहीं उतरी।

इसके बाद कोर्ट ने 15 मई 2018 की बर्खास्तगी को असंवैधानिक और अनुचित ठहराते हुए तत्काल प्रभाव से उसे रद्द कर दिया। शंकरराम को तुरंत सेवा में बहाल करने का आदेश दिया गया। इसके साथ ही बर्खास्तगी और बहाली की तिथि के बीच बीते वर्षों को "निरंतर सेवा अवधि" माना जाएगा, जिसका प्रभाव वेतन, प्रमोशन और अन्य सेवा लाभों पर भी पड़ेगा। हाईकोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि मामला आगे की कार्यवाही के लिए IG को भेजा जा रहा है। वे तीन महीने के भीतर—और केवल नियमित जांच के रिकॉर्ड के आधार पर—अगर आवश्यक हुआ तो कोई नई सजा निर्धारित कर सकते हैं। यानी अब कोई भी भविष्य का फैसला मनमाने ढंग से या अतिरिक्त बयानबाजी के आधार पर नहीं लिया जा सकेगा। इस मामले ने एक बार फिर सरकारी सेवाओं में अनुशासनात्मक कार्रवाइयों की पारदर्शिता, जांच की गुणवत्ता और अधिकारियों द्वारा शक्तियों के उपयोग पर बड़ा सवाल खड़ा किया है। कोर्ट की यह टिप्पणी कि "नौकरी से बर्खास्तगी आर्थिक मौत के बराबर है", आने वाले समय में उन सभी मामलों के लिए मिसाल बन सकती है जिनमें बिना ठोस सबूत कर्मचारियों पर कठोर दंड थोप दिए जाते हैं।

महाकाल मंदिर में भस्म आरती की ऑनलाइन बुकिंग पर रोक, नववर्ष पर बढ़े सैलाब को देखते हुए 25 दिसंबर से 5 जनवरी तक केवल ऑफलाइन परमिशन

(जीएनएस)। उज्जैन। विश्वप्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग में इस बार नववर्ष के अवसर पर विशाल भीड़ की आशंका के चलते व्यवस्थाओं में बड़ा बदलाव किया गया है। महाकाल मंदिर समिति ने घोषणा की है कि 25 दिसंबर 2025 से 5 जनवरी 2026 तक सुबह होने वाली भस्म आरती के लिए ऑनलाइन बुकिंग पूरी तरह बंद रहेगी। इस अवधि में केवल ऑफलाइन माध्यम से ही प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। प्रशासक प्रथम कौशिक ने बताया कि हर वर्ष नववर्ष पर उज्जैन में श्रद्धालुओं का अभूतपूर्व जमावड़ा उमड़ता है, लेकिन इस बार आंकड़े और भी बड़े होने का अनुमान है। मंदिर समिति के अनुसार 31 दिसंबर से 2 जनवरी के बीच लगभग 10 लाख श्रद्धालु उज्जैन पहुंच सकते हैं, जिसके चलते ऑनलाइन बुकिंग बंद रखकर भीड़ को नियंत्रित करने और सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्णय लिया गया है।

कौशिक के अनुसार, भस्म आरती के लिए अनुमति उसी श्रद्धालु को मिलेगी, जो एक दिन

पहले निर्धारित स्थान पर फॉर्म भरकर आवेदन करेगा। अनुमति प्रतिदिन उपलब्ध स्थान और भीड़ को देखते हुए जारी की जाएगी।

नव वर्ष पर मंदिर आने वाले भक्तों को विशेष मार्ग से प्रवेश कराया जाएगा। त्रिवेणी संग्रहालय से एंट्री कर महाकाल लोक, मान सरोवर और टनल मार्ग होते हुए श्रद्धालुओं को गणेश मंडपम तक लाया जाएगा। वहीं बाहर निकलने के लिए अलग एग्ज़िट टनल और मार्ग निर्धारित किया गया है, जिससे भीड़ का टकराव न हो और हर दिशा में प्रवाह नियंत्रित रहे।

मंदिर समिति ने बताया कि सुरक्षा और व्यवस्था के लिए अतिरिक्त बल तैनात किए गए हैं और पूरे परिसर में निगरानी व्यवस्था बढ़ाई गई है। जिन श्रद्धालुओं को भस्म आरती के लिए ऑनलाइन या ऑफलाइन अनुमति नहीं मिल पाएगी, उनके लिए एक चलित भस्म आरती दर्शन व्यवस्था की शुरुआत की गई है। इस व्यवस्था के अंतर्गत भक्त निर्धारित लाइन में खड़े होकर दूर से ही भस्म आरती के दर्शन कर सकेंगे।

नववर्ष के मौके पर महाकाल मंदिर में उमड़ने वाली भीड़, भक्ति और दिव्यता को देखते हुए प्रशासन ने सभी व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दे दिया है, ताकि हर भक्त सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सहज तरीके से महाकाल के दर्शन कर सके।

बांग्लादेश में डेंगू का बढ़ता संकट, एक दिन में 200 नए मरीज - लेकिन मौतें शून्य

ढाका। बांग्लादेश इस समय डेंगू के गंभीर प्रकोप से जूझ रहा है और स्थिति लगातार चिंताजनक बनती जा रही है। स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (DGHS) द्वारा जारी ताज़ा आंकड़ों के अनुसार, पिछले 24 घंटों में देशभर के विभिन्न अस्पतालों में 200 नए डेंगू मरीज भर्ती किए गए हैं। राहत की बात यह है कि इस अवधि में एक भी मौत दर्ज नहीं हुई, हालांकि कुल संक्रमितों की संख्या और अब तक हुई मौतें वर्ष भर की भयावह तस्वीर पेश करती हैं।

नए मामलों में चटगांव संभाग सबसे आगे रहा, जहां 92 मरीज भर्ती हुए। ढाका उत्तर नगर निगम क्षेत्र में 72 मरीज सामने आए, जबकि शेष मामले देश के अन्य हिस्सों से आए हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, तापमान में बदलाव और लगातार बनी आर्द्रता डेंगू फैलाने वाले एडीज मच्छरों के तेजी से पनपने का कारण बन रही है। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि इस वर्ष अब तक 96,827 लोग डेंगू की चपेट में आ चुके हैं। इनमें 63 प्रतिशत पुरुष और 37 प्रतिशत महिलाएं शामिल हैं। लगातार बढ़ते मामलों के बीच यह

भी सामने आया है कि इस साल डेंगू से अब तक 394 लोगों की मौत हो चुकी है।

पिछले वर्ष 2024 की तुलना में यह स्थिति बेहद खतरनाक मानी जा रही है। बीते वर्ष कुल 1,01,214 डेंगू मरीज मिले थे और 575 लोगों की मौत हुई थी। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि बरसात और मौसम की आर्द्रता लंबे समय तक बनी रहती है, तो इस वर्ष संक्रमण के आंकड़े इससे भी आगे जा सकते हैं। सरकार ने देशभर की नगरपालिकाओं और स्थानीय निकायों को मच्छर नियंत्रण अभियान तेज करने और अस्पतालों में डेंगू वार्डों की क्षमता बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। साथ ही आम जनता से घरों में पानी जमा न होने, साफ-सफाई रखने और शुरुआती लक्षणों पर तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लेने की अपील की गई है। बांग्लादेश में बढ़ते डेंगू मामलों को देखते हुए दक्षिण एशिया के अन्य देशों में भी सतर्कता बढ़ा दी गई है, क्योंकि सीमा पार आवाजाही और मौसमीय स्थितियाँ संक्रमण के जोखिम को बढ़ा सकती हैं।

लोकसभा में डीपफेक पर सख्ती की तैयारी, शोषण और साइबर धोखाधड़ी रोकने के लिए निजी विधेयक पेश

(जीएनएस)। नई दिल्ली। डिजिटल युग में तेजी से बढ़ते डीपफेक के खतरों पर अब संसद स्तर पर कड़ा कदम उठाने की पहल की गई है। लोकसभा में शुक्रवार को शिवसेना सांसद श्रीकांत शिंदे ने एक महत्वपूर्ण निजी सदस्य विधेयक पेश किया, जिसमें देशभर में बढ़ते डीपफेक दुरुपयोग को रोकने के लिए स्पष्ट कानूनी ढांचा, सख्त दंड और नियामकीय रणनीति बनाने की मांग की गई है।

सांसद शिंदे ने कहा कि डीपफेक तकनीक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के तेज विकास का परिणाम है, जिसका सकारात्मक उपयोग शिक्षा, फिल्म निर्माण, विज्ञापन और रचनात्मक उद्योगों में दिखाई देता है। लेकिन दूसरी ओर इसके दुरुपयोग के मामले चिंताजनक स्तर पर बढ़ रहे हैं —

- फर्जी वीडियो बनाकर राजनीतिक दुष्प्रचार,
- महिलाओं के खिलाफ शोषण और ब्लैकमेल,
- फर्जी ऑडियो–वीडियो से धोखाधड़ी,
- और राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों में इसका इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है।

उन्होंने कहा कि मौजूदा कानूनी ढांचा इस नई तकनीक की जटिलता को कवर नहीं करता, जिसके चलते पीड़ितों को न्याय पाना मुश्किल हो जाता है और अपराधियों पर कार्रवाई धीमी पड़ जाती है। उन्होंने आगाह किया कि डीपफेक के कारण "राष्ट्रीय सुरक्षा, व्यक्तिगत निजता और लोकतांत्रिक संस्थाओं में जनता का विश्वास" गंभीर खतरे में पड़ सकता है।

विधेयक में सुझाव दिया गया है कि केंद्र सरकार डीपफेक तकनीक के दुरुपयोग पर स्पष्ट परिभाषा, नियामक निकाय, कंटेंट ट्रैकिंग सिस्टम, और कड़ा दंड प्रावधान लागू करे, ताकि किसी भी व्यक्ति, संस्था या प्लेटफॉर्म द्वारा डीपफेक का दुरुपयोग तुरंत रोका जा सके।

विपक्ष और कई अन्य दलों के सांसदों ने भी हाल के महीनों में वायरल हुए डीपफेक से जुड़ी घटनाओं का उदाहरण देते हुए इस पहल का समर्थन किया है। संसद में यह मुद्दा व्यापक बहस का विषय बन सकता है, क्योंकि देश में सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या डिजिटल सुरक्षा को एक बड़ी चुनौती बना रही है।